फैक्ट्री क्लर्क
की
डायरी
INK
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने 'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है। इस आंदोलन का मकसद आम जनता में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

फैक्ट्री क्लर्क की डायरी	***Factory Clerk Ki Diary***
पुस्तकमाला संपादक तापोश चक्रवर्ती	***Series Editor*** **Taposh Chakravorty**
कॉपी संपादक राधेश्याम मंगोलपुरी	***Copy Editor*** **Radheshyam Mangolpuri**
रेखांकन सुनयना बी. पाण्डे	***Illustration*** **Sunayana B. Pande**
ग्राफिक्स जगमोहन	***Graphics*** **Jagmohan**
प्रथम संस्करण जुलाई, 2007	***First Edition*** **July, 2007**
सहयोग राशि 35 रुपये	***Contributory Price*** **Rs. 35**
मुद्रण सन शाइन ऑफसेट नई दिल्ली - 110 018	***Printing*** **Sun Shine Offset** **New Delhi - 110 018**
सौजन्य पिपल्स पब्लिशिंग हाऊस	***Courtesy*** **Peoples Publishing House**

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110 017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

web site: www.bgvs.org

BGVS JULY 2007 2K 3500 NJVA 0021/2007

हम लेखकों के विचारों की स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं, सहमति/असहमति अलग बात है।

फैक्ट्री क्लर्क की डायरी

च्यांग चिलुंग : एक परिचय

च्यांग चिलुंग का जन्म 1941 में हपेइ प्रान्त की छांगश्येन काउंटी के एक गांव में हुआ था। 1958 में उन्होंने थ्येनचिन भारी मशीन-कारखाने में मजदूर की नौकरी की। 1960 में वह सेना में शामिल हो गए। 1965 की गर्मियों में वह पुनः कारखाने लौटे और उत्पाद दल के नेता, कारखाना निदेशक के क्लर्क, वर्कशाप में पार्टी शाखा के उपसचिव और वर्कशाप के उपनिदेशक आदि विभिन्न पदों पर उन्होंने कार्य किया।

च्यांग चिलुंग ने 1962 में लिखना आरम्भ किया। 1976 में प्रकाशित ***मशीनरी और बिजली ब्यूरो के प्रधान के जीवन का एक दिन*** कहानी ने तीव्र सामाजिक प्रतिक्रिया उत्पन्न की। 1979 में प्रकाशित ***मैनेजर छ्याओ ने कार्यभार संभाला*** कहानी ने उस वर्ष राष्ट्रीय कहानी प्रतियोगिता में प्रथम श्रेणी का पुरस्कार प्राप्त किया। उसी वर्ष उन्होंने चीनी लेखक संघ की सदस्यता ली। 1977-80 में प्रकाशित उपन्यासिका ***पथप्रदर्शक*** को राष्ट्रीय उपन्यासिका प्रतियोगिता (1977-80) में द्वितीय पुरस्कार मिला।

फैक्ट्री क्लर्क की डायरी

4 मार्च, 1979

आज मैं समय से एक घंटे पहले कारखाने गया, क्योंकि निदेशक वांग जाने वाले थे। मेरा अनुमान था कि उनके जैसा आदमी जाने से पहले सभी के आ जाने की प्रतीक्षा नहीं करेगा। निश्चित था कि कारखाने का काम आरंभ होने से पहले वह कारखाना छोड़ देना चाहेंगे।

निदेशक वांग ने स्वयं कंपनी के पास आवेदन देकर अपना स्थानांतरण करवाया था। मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं, उन्होंने यही सोचा होगा कि यदि वह यहां रुके रहे तो कारखाने में अपना समय बर्बाद करेंगे। निस्संदेह उपनिदेशक ल्वो ने इसके लिए उनको विवश किया था। शायद कारखाने का हर आदमी इस बात से वाकिफ था, पर किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि शीशाविहीन खिड़की से चिपके कागज को फाड़ दे, जिससे सत्य की हवा आ सके। खासकर निदेशक वांग के सामने तो यह करने का साहस किसी में नहीं था। यह एक मौन समझदारी थी, जिसने आसपास के लोगों के लिए कभी हालात को असहनीय नहीं होने दिया।

पिछले चार वर्षों से मैं यहां क्लर्क हूं। मेरे सामने दो निदेशक जा चुके हैं। निदेशक वांग तीसरे हैं। उन्होंने बड़े उत्साह और जोश के साथ कार्यभार संभाला था, पर अब निराश हो अपने उत्तराधिकारी को रास्ता दे जा रहे थे। जो अधिकार की खोज में रहते हैं, वे प्रभाव और सत्ता का इस्तेमाल करते हैं, पर सत्ता भी उस व्यक्ति का इस्तेमाल कर बदला लेती है। स्थानांतरण, पुनर्चुनाव और नेताओं की अदला-बदली

शायद समस्याओं को सुलझाने का आसान तरीका है। यह पहले भी होता था, अब भी होता है। देश-विदेश सब जगह यही हाल है। हर बार एक निदेशक के स्थानांतरण के साथ एक आत्मा नंगी होती है। मुझे शांत होने में समय लगेगा। मैंने क्लर्क की हैसियत से पहली बार अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया और निदेशक वांग को नयी जगह पहुंचाने के लिए कारखाने की जीप की व्यवस्था की।

मेरे पहुंचने पर रिसेप्सन पर बैठे व्यक्ति ने कहा, ''निदेशक वांग आधे घंटे पहले चले गए।''

''अकेले?''

''पार्टी सचिव ल्यू उनका सामान ले गए हैं।''

''और कारखाने की जीप?''

''कल रात उपनिदेशक ल्वो ने जीप कहीं भेज दी थी।''

मेरे दिल में हूक उठी। मैंने निदेशक वांग की मदद के लिए एक घंटा पहले आना तय किया, पर उन्हें अपमानित करने पर तुला व्यक्ति एक दिन पहले ही दांव चल गया। मेरे अंदर क्रोध की एक लहर उठी, मुझे पार्टी सचिव ल्यू पर बड़ा तेज गुस्सा आया। ऐसी ईमानदारी किस काम की, बेअसर व्यक्ति! आपके शानतुंग प्रांत ने प्राचीन काल से ही कितने बड़े व्यक्ति और वीर पैदा किए, पर आपमें उनका एक अंश भी क्यों न आया! वरिष्ठ अधिकारी ने न केवल निदेशक को बाहर भेजा, बल्कि वह उनका सामान भी ढोकर ले गए और उन्हें भीड़ भरी बस में चढ़ा दिया।

मैं इन्हीं विचारों में खोया कारखाने के गेट पर खड़ा था, तभी जीप आकर गेट पर रुकी। उपनिदेशक ल्वो जीप से उतरे, उनके पीले चेचकरू चेहरे पर आत्मसंतोष की मुस्कान थी। मुझे देखकर हंसते हुए बोले, "लाओ वेई, क्या बात है? आज बड़े सवेरे आ गए? अच्छा, निदेशक वांग से मिलने आए थे? वह चले गए क्या?''

"हां, चले गए" –खराब मूड में रहने के कारण मैंने विशेष कुछ

नहीं कहा। दूसरे ऐसी-वैसी कोई बात कहकर अनावश्यक मुसीबत मोल नहीं लेना चाहता था। आखिर एक क्लर्क की हैसियत ही क्या होती है?

उपनिदेशक ल्वो ने अपनी जेब से दोहरी आवाज वाले पटाखे निकाले। मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा, "ये दो तुम ले लो।"

मैंने नहीं लिये और कहा, "मैं इन्हें छोड़ने का साहस नहीं कर सकता।"

उन्होंने दबी हंसी के साथ कहा, "ओह, ऐसा कहो न कि अब पटाखे छोड़ने की उम्र नहीं रही!"

"क्या आप हमेशा जेब में पटाखे लेकर चलते हैं?" मैंने पूछा।

उन्होंने बताया, ''वसंत त्योहार के बच गए थे। दुर्भाग्य को भगाने के लिए छोड़ रहा हूं।''

...ब...!बम!

''ही...ही...ही...ही!''

ठंडी हवा के झोंके की तरह वह आवाज कानों में घुसी और हड्डी तक को कंपा गई।

अच्छा हुआ कि निदेशक वांग पहले चले गए। दोहरी आवाज के पटाखे की आवाज सुनकर उनके दिल पर क्या गुजरती?

कारखाना निदेशक! कौन सोच सकता था कि इस पद के लिए कोई इतना पतित व्यवहार कर सकता है। इस पद को पाने और अपने पद के आगे से 'उप' हटाने के लिए ल्वो पहले ही तीन निदेशकों को भगा चुके थे। पर कंपनी ने दो बार नए निदेशक को नियुक्त कर दिया। क्या निदेशक वांग के बदले फिर से कोई निदेशक आएगा या फिर

उपनिदेशक की उम्मीद के अनुसार उनके पद के आगे 'उप' जैसा भारी उपसर्ग हट जाएगा? यदि ऐसा हुआ तो मुझे भी इस कार्यालय को छोड़ने के बारे में सोचना होगा और उत्पादन विभाग में सांख्यिकीविद् की पुरानी नौकरी पर लौट जाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

11 मार्च, 1979

"लाओ वेइ, क्या यह सच है कि उपनिदेशक ल्वो को निदेशक बना दिया गया है?" अनेक मजदूर मुझसे यह सवाल पूछ रहे थे।

मैंने बार-बार यही जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।" इस जवाब को सुनने पर मजदूरों ने आश्चर्य प्रकट किया, "रहने भी दें। भला आपको मालूम नहीं होगा?"

मेरे दयनीय देशवासियो··· तुम्हें कोई अधिकार नहीं है, पर तुम इतने जिज्ञासु हो। तुम सब बस किसी विषय पर गप्प लड़ाना चाहते हो। कोई भी निदेशक हो, तुम्हें तो अपना काम करना है। किसी की भी नियुक्ति हो, इससे तुम्हें क्या? पिछले कुछ दिनों से उपनिदेशक ल्वो को सभी निदेशक कहने लगे हैं। कुछ वर्कशाप अपनी रिपोर्ट अब उपनिदेशक ल्वो के बजाय निदेशक ल्वो के नाम भेजती हैं। मजदूरों से भी दयनीय स्थिति उन कार्यकर्ताओं की है, जो हवा के रुख के अनुसार पीठ कर लेते हैं।

"लाओ वेइ, आपने देखा? आखिर उपनिदेशक ल्वो ने निदेशक का पद संभाल ही लिया। सुबह से रात तक वह पूरे कारखाने में घूमते और निरीक्षण करते हैं। बात करते समय उनकी आवाज का स्वर भी ऊंचा हो गया है और चेहरे का हाव-भाव भी पहले से अच्छा लगता है।"

"हां, मैंने देखा है।" क्या सचमुच लोग इस बात को बहुत अधिक महत्व नहीं दे रहे हैं? आपको मालूम होना चाहिए कि आप कारखाने में दूसरों का चेहरा देखने नहीं, अपना काम करने आए हैं! शायद क्लर्क होने के कारण मैं इतना बेसुध या फिर तटस्थ हूं। मैं

सबकी बातें सुनता हूं और सभी के चेहरों के भाव देखता हूं। पर बिना सुने मैं उनकी बातें सुन लेता हूं, बगैर कोशिश के उनके चेहरे के भाव देख लेता हूं। हमेशा इन सबसे दूर ही रहने की कोशिश करता हूं।

कितने दुख की बात है! अगर किसी दिन मैं स्वयं कारखाना निदेशक बना, मैं किसी को भी इस तरह परेशान नहीं रहने दूंगा। मैं अपने लिए रोबोट को क्लर्क के तौर पर रख लूंगा, जिसके हृदय नहीं होता, जो सांस नहीं लेता, जिसके मुंह-कान नहीं होते और स्टील के बने चेहरे पर कोई भाव नहीं होता। संक्षेप में, जो प्रकृति के हिसाब से बदलेगा, न कि राजनीतिक मौसम से।

मैं जानता हूं, इन दिनों मेरे भाव और मेरी आवाज के टोन पर कोई निगरानी रख रहा है। मैं अभी भी ल्वो मिंग का उल्लेख उनके पूरे पद के साथ करता हूं, 'उपनिदेशक ल्वो' जिन दस्तावेजों को निदेशक के पास भेजना चाहिए, उन्हें मैं नियम के अनुसार निदेशक की अनुपस्थिति में पार्टी सचिव ल्यू के पास ले जाता हूं। फिर उनकी सलाह के अनुसार दूसरों तक पहुंचाता हूं। मैं उन्हे सीधे ल्वो मिंग के पास नहीं ले जाता या अपनी सलाह नहीं देता, क्योंकि मुझे अपनी औकात मालूम है। ल्वो ने भी इसे महसूस किया है, पर वह कुछ भी नहीं कर सकते। मुझे अभी तक अधिकारियों से उनकी नियुक्ति की सूचना नहीं मिली है।

ल्वो मिंग के निदेशक बनने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि यह मेरे अधिकार से बाहर है। पर अधिकारी मेरी राय पर विचार करें तो मैं यही कहूंगा, "यह सच है कि ल्वो मिंग काफी दिनों से इस कारखाने में हैं। यहां की सभी चीजों से परिचित हैं और उनका समर्थन करने वाले लोग भी हैं, पर वह कारखाने के निदेशक होने के योग्य नहीं हैं। उन्हें केवल निदेशक पद की चिंता है, इस पद की जिम्मेदारी से उनका कोई वास्ता नहीं है। वह अच्छे निदेशक होने की योग्यता नहीं रखते।"

12 मार्च 1971

आज विचित्र बात हुई! आज उपनिदेशक ल्वो की बेटी ल्वो चिंगय्वी मेरे दफ्तर आई और उसने आधे दिन तक मुझे व्यस्त रखा।

दो साल पूर्व वह देहात से शहर आने में सफल हुई। पर तब से उसे कोई काम नहीं मिला, क्योंकि उसका स्तर काफी ऊंचा था। वह किसी विशेष समूह की इकाई में काम नहीं करेगी। पसंद का काम न मिलने पर या घर से दूर दफ्तर होने पर वह इंकार कर देती है। वह बहुत कम ही दफ्तर आती थी। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्यों मेरे सामने बैठी लगातार बातचीत किए जा रही है।

वह काफी देर तक इधर-उधर की बातें करती रही। अंत में जब उसके काम का प्रसंग आया, तब उसने तपाक से कहा, "मैं आपके कारखाने में काम करना पसंद करूंगी।"

मैंने अविश्वास प्रकट किया, "तुम मजाक तो नहीं कर रही हो? हमारा कारखाना बहुत छोटा है। हालांकि यह राज्य संचालित कारखाना है, पर यहां केवल 200 मजदूर काम करते हैं। तुम्हें यह जगह बहुत छोटी लगेगी। दूसरे, यह एक रासायनिक कारखाना है, यहां का काम तुम्हारी पसंद का भी नहीं होगा।"

उसने साफ-साफ कहा, "मैं दो वर्षों से अच्छी नौकरी की उम्मीद में बैठी हूं। इस साल मैं 26 की हो चुकी हूं। इस तरह बैठी अब ज्यादा प्रतीक्षा नहीं कर सकती। और फिर यह कारखाना अच्छा है, यहां लागत कम है और मुनाफा ज्यादा है, इसलिए मजदूरों को काफी बोनस भी मिल जाता है।"

"जब ऐसा ही तुम्हारा इरादा है तो अपने पिता से इस मामले पर बात क्यों नहीं करती!"

"नहीं, अच्छा नहीं लगेगा। लाओ वेइ, आप ही मेरी ओर से पापा से बात कर लें!"

अपने व्यक्तिगत हित के लिए, वरिष्ठ अधिकारी का कृपा-पात्र

बनने के लिए, यह अच्छा मौका था। जब कारखाना निदेशक कुछ हासिल करना चाहता है, पर स्वयं करने में हिचक होती है तो उसके क्लर्क को यह जिम्मेदारी सौंप दी जाती है। जरूरत के अनुसार निदेशक की मदद के लिए उसे अपने सामर्थ्य के अनुसार सब कुछ करना चाहिए। पर चार वर्ष पहले पार्टी की शाखा के आदेश के खिलाफ जाने के बजाय मैंने यहां आकर क्लर्क बनना स्वीकार किया था। यहां आने पर मैंने एक सौगंध खाई थी : चाहे किसी के लिए भी काम करूं, उससे सिर्फ कार्यालयी रिश्ता रखूंगा और किसी निजी काम के झमेले में नहीं पड़ूंगा। मैं कार्यालय के नियम के अनुसार कारखाने के काम की देखभाल करूंगा। किसके साथ काम कर रहा हूं, यह मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं होगा और सरकारी काम में अपनी व्यक्तिगत इच्छा को हस्तक्षेप नहीं करने दूंगा। इसलिए मैंने उसे जवाब दिया, "मैं पहले पार्टी शाखा से इस संबंध में पूछूंगा। फिर हम इस विषय पर बात कर सकते हैं।"

ल्वो चिंगय्वी को मेरी बात अच्छी नहीं लगी। निस्संदेह उसने इस समय आने का फैसला इसलिए किया होगा कि उसके पापा के निदेशक बनने की पूरी संभावना है। आज के समाज के नए श्रेणी विभाजन के अनुसार निदेशक की बेटी का ओहदा क्लर्क से ऊंचा है, इसलिए क्लर्क को उसकी अच्छी सेवा करनी चाहिए। किसी भी सूरत में निदेशक की बेटी का क्लर्क नहीं कहलाना चाहता। ल्वो चिंगय्वी मेरी बात से बिलकुल खुश नहीं थी और अपने पिता की तरह झूठी मुस्कान फेंकते हुए उसने दरवाजा खोला और चली गई।

15 मार्च 1979

सचिव ल्यू ने खुश होकर धीमे स्वर में मुझे बताया, "नए निदेशक जल्दी ही आने वाले हैं।" सचिव कभी-कभी बच्चों की तरह भोला व्यवहार करते हैं। इसके पहले तीन बार उन्होंने खुशी-खुशी नए निदेशकों का स्वागत किया और भारी दिल से उन्हें विदा किया। यहां तक कि उनका सामान भी ढोया। अब नए निदेशक के आने की बात

सुनकर वह फिर से खुश हैं।

शायद मैं खुशी और निराशा दोनों से तटस्थ हूं।

18 मार्च, 1979

"ट्रिंग···ट्रिंग···ट्रिंग···"

बाहर से ही मुझे अपने कार्यालय में बजती टेलीफोन की घंटी सुनाई पड़ी। हम हमेशा उनका उपहास करते हैं जो समय से एक मिनट पहले काम पर नहीं आते। हम मजाक में उन्हें 'घड़ी के साथ चलने वाला' कहते हैं। सच यह है कि दस दिनों में आठ दिन कार्यालय में मेरे पहुंचने के पहले से घंटी बजती रहती है। इस समय आने वाले अधिकांश फोन निदेशक के लिए होते हैं, क्योंकि पाली आरंभ होने के समय उन्हें पकड़ पाना आसान होता है। पाली आरंभ होने के आधे घंटे बाद भी उन्हें खोज पाना मुश्किल होता है। मुझे मालूम नहीं कि वे कहां गायब हो जाते हैं, यह भी नहीं मालूम कि वे कार्यालय के काम में व्यस्त रहते हैं या अपने काम में।

"ट्रिंग···ट्रिंग···ट्रिंग···"

क्लर्क की इच्छा न हो तो वह एकदम बहरा बन जाता है। चाहे लगातार घंटी बजती रहे, मैं हमेशा आम दिनों की ही तरह दरवाजा खोलता हूं और थैले से ब्रेड या खाने की कोई और चीज का एक टुकड़ा तोड़ने के बाद ही रिसीवर उठाता हूं।

"हेलो, हेलो, क्या लाओ वेई हैं! मेरी एक मदद करें। कल मेरे पिता का देहांत हो गया, आज उन्हें अंतिम संस्कार के लिए ले जाना है। क्या आप निदेशक से कहकर कारखाने की कार की व्यवस्था करवा देंगे?"

"आप कौन हैं?" मैंने चौंककर पूछा।

"मैं फांग हूं, फांग वानछंग। माफ करें, आपको थोड़ी परेशानी होगी।"

मैंने अनिच्छा से कहा, "आपने पहले इस बारे में क्यों नहीं बताया?"

"मुझे भी मालूम नहीं था कि इतनी जल्दी वह चल बसेंगे।"

यह एक गंभीर समस्या थी। मैंने समझाते हुए कहा, "आप भी अच्छी तरह जानते हैं कि कारखाने में केवल एक जीप और एक कार है। दोनों गाड़ियां कच्ची सामग्री लाने के लिए बाहर गई हैं। एक-दो दिनों से पहले नहीं लौट पाएंगी। मैं कुछ भी करने में असमर्थ हूं।"

फांग ईमानदार और मेहनती क्रेन आपरेटर हैं। यदि दूसरा कोई उपाय होता तो वह कभी मदद नहीं मांगते। वह जिद्दी भी हैं। मैंने सारी स्थिति उन्हें समझा दी, फिर भी वह अनुरोध करते रहे, "लाओ वेइ, मैं निदेशक ल्वो से बात नहीं कर सकता। लोग चाहे जो भी कहते रहें, पर आप पिछले कुछ वर्षों से निदेशक के क्लर्क हैं और आपकी पहुंच मुझसे अधिक है। आप ही का भरोसा है। अंतिम संस्कार का समय तय कर पाना आसान नहीं होता। मेरे संबंधी आ रहे हैं और यदि हमें कार नहीं मिली तो हम श्मशान घाट नहीं जा सकेंगे। मैं क्या करूं? लाओ वेइ, मैं आपका भरोसा कर रहा हूं। कृपया कोशिश करें।"

अब यह मेरे ऊपर था कि फांग के पिता का अंतिम संस्कार हो जाए। पर मेरी समझ में नहीं आया कि मैं कार की व्यवस्था कहां से करूं। मजदूरों की नजर में क्लर्क की हैसियत बड़ी होती है। उन्हें यह नहीं मालूम कि देखा जाए तो मैं निदेशक के नौकर से अधिक कुछ नहीं हूं, उनके लिए दौड़धूप करके उनके आदेशों को तोते की तरह दुहरा दिया करता हूं। पर ऐसे समय पर सत्य के तर्क से फांग को नहीं समझाया जा सकता था। फिलहाल उनकी जान-पहचान में मैं ही बड़ी हैसियत का था। उनके पास भी दूसरा कोई उपाय न था।

मैं रिसीवर थामे परेशान मुद्रा में बैठा था कि एक गोल-मटोल व्यक्ति मेरे पीछे से सामने आया। (मुझे नहीं मालूम वह कब अंदर आया था।) उसने हंसते हुए मुझसे कहा, "मुझे बात करने दें।" मैं चिढ़ा हुआ था, मैंने बेमन से पूछा, "हां, क्या बात है?"

गोल-मटोल नाटे व्यक्ति के फूले केक जैसे चेहरे पर उभरी चमकीली सोनमछली जैसी आंखें थीं। वह व्यक्ति अत्यंत प्रसन्नचित्त लगा। उसकी मुस्कराहट से ऐसा लग रहा था जैसे किसी पुराने परिचित से मिल रहा हो। मैंने अनुमान लगाया कि वह आपूर्ति और विपणन विभाग का प्रभारी होगा और किसी काम के सिलसिले में कारखाने आया होगा। मैंने हाथ से बायीं तरफ इशारा किया, ''उत्पादन विभाग बायीं तरफ तीसरे दरवाजे में है।''

नाटे व्यक्ति ने सिर हिलाकर कहा, ''मेरा नाम चिन फंगछि है। मुझे रसायन ब्यूरो से पूर्वी रासायनिक कारखाने का काम सौंपा गया है।''

तो वह नए निदेशक थे! मैं सकते में आ गया। मैंने स्वयं को गाली दी कि मैं लोगों की वेशभूषा से उनका अनुमान लगाने लगा हूं। कम से कम क्लर्क को तो दंभ से दूर रहना चाहिए।

मैंने चिन फंगछि को रिसीवर दिया। उन्होंने रिसीवर लेकर गंभीर मगर सांत्वना देने के स्वर में कहा, "चिंता न करें, कॉमरेड फांग। आपको कार कितने बजे चाहिए?" उन्होंने अपनी जेब से बॉल पेन निकाला, मैंने उन्हें कागज दिया। लिखते हुए वह फांग की बात दुहरा रहे थे।

"आपको दस बजे कार चाहिए, ठीक है। आपका पता क्या है? चिनचओ रोड, सेक्शन-5, नंबर-8, ठीक है। आपका पूरा नाम क्या हुआ? फांग वानछंग। अच्छा। आप दस बजे कार का इंतजार करें। कार समय पर वहां पहुंच जाएगी। तकल्लुफ मत कीजिए और किसी से इसकी चर्चा न कीजिए। और कोई बात हो तो बताएं। मैं कौन हूं, इससे फर्क नहीं पड़ता। मैं आपके काम आ सकूं, यही काफी है। हां, एक बात और। बूढ़े व्यक्ति की मृत्यु से अधिक दुखी नहीं होना चाहिए। आप परेशान न हों। आप अपना ख्याल रखें और कुछ दिन आराम करें…"

चिन फांगछि ने बाएं हाथ से रिसीवर उठाकर फिर दूसरा नंबर

घुमाया, "रासायनिक मशीनरी मरम्मत केन्द्र? आप कौन हैं? लाओ तू? मैं कौन बोल रहा हूं? हा! हा! हां, नए पद पर अभी-अभी आया हूं। मुझे आना ही था, दूसरा कोई उपाय नहीं था। तुम सबों को और कारखाने को मैं छोड़ना नहीं चाहता था। भई, एक जरूरत आ पड़ी है, मुझे अपनी गाड़ी की जरूरत है। क्या मिल सकेगी? मिल जाएगी? बहुत अच्छा। ड्राइवर श्याओ सुन से कह दें कि उसे चिनचओ रोड, सेक्शन-5, नंबर-8 पते पर दस बजे पहुंचना है। वहां फांग वानछंग नामक व्यक्ति मिलेगा। धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद। मेरी किसी मदद की जरूरत हो तो एक फोन कर देना।"

रिसीवर रखने के बाद उन्होंने पलटकर मुझसे पूछा, "यहां हमारे पास कितने टेलीफोन हैं?"

मैंने कहा, "यह एक छोटा कारखाना है। यहां केवल तीन टेलीफोन हैं। एक तो यह है, एक उत्पाद विभाग में है और एक रिसेप्शन पर।"

वह कुर्सी खींचकर बैठ गए और अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर मेरी तरफ बढ़ाया। उन्होंने अपनी सिगरेट जलाई। उन्होंने मुझे थोड़ी देर तक देखा, उनकी उभरी आंखें हंसी से चमक रही थीं। उन्होंने कहा, "शायद पूछने की जरूरत नहीं है? आप अवश्य ही कॉमरेड वेइ हैं, यहां की सारी चीजों के प्रभारी क्लर्क, हैं न!"

मैंने धीमे स्वर में कहा, "मेरा नाम वेइ चिश्यांग है। मुझे मेरी योग्यता से बड़ा काम सौंप दिया गया है। आपको इसी परिस्थिति में काम चलाना होगा।" मेरे स्वर से स्पष्ट था कि क्लर्क होने की मुझे खुशी नहीं है।

निदेशक चिन ने नम्र स्वर में कहा, "मैं अभी-अभी आया हूं और यहां के माहौल से परिचित नहीं हूं। मुझे हमेशा आपकी मदद की जरूरत पड़ेगी।"

मैंने हाथ झटककर कहा, "मैं इस दिशा में नहीं सोच रहा था।"

निदेशक चिन मेरे जवाब से अप्रसन्न दिखे। उन्होंने गंभीरता से अपनी बात पर जोर देकर कहा, "ईमानदारी की बात यह है कि जनता कार्यकर्ताओं को सिखाती है और क्लर्क निदेशक के प्रशिक्षक होते हैं। जब भी कोई सभा होती है या कोई रिपोर्ट भेजनी होती है तो निदेशक अपने क्लर्क पर निर्भर करता है। यदि क्लर्क प्रतिभाशाली हो तो निदेशक सक्षम लगता है, किन्तु यदि क्लर्क अच्छा न हो तो निदेशक से कोई उम्मीद नहीं होती। सारे सरकारी दस्तावेज पहले आपके हाथ में आते हैं, फिर उन्हें विभिन्न प्रभारी मैनेजरों को देने का काम आपका होता है। सचमुच, आप निदेशक के निरीक्षक हैं। निदेशक मजदूरों को संभालता है तो क्लर्क निदेशक को संभालता है।"

उनकी बात सुनकर मैं स्थिर नहीं रह सका। पहले तो मुझे आशा बंधी, पर न जाने क्यों बाद में परेशानी-सी महसूस हुई और मेरा चेहरा लाल हो गया। मैं निश्चित नहीं कर पा रहा था कि मेरी खुशामद कर रहे हैं या मुझ पर व्यंग्य कस रहे हैं। कारखाने में मेरी हैसियत बस इतनी है कि जिस काम का मुझे प्रशिक्षण नहीं मिला, मैं वह काम कर रहा हूं। मैं नए निदेशक की बात से हक्का-बक्का रह गया। अभी भी मैं नहीं कह सकता कि उनके बारे में मेरे क्या विचार हैं? बस इतना लगा कि काम करने वाले व्यक्ति हैं।

दोपहर में पिता का अंतिम संस्कार कर बिना कपड़े बदले फांग वानछंग सीधे कारखाने आए और नए निदेशक से मिलना चाहा। निदेशक चिन सचिव ल्यू के साथ वर्कशाप में काम की स्थिति देखने गए थे। जब मजदूरों ने मुझे फांग के साथ निदेशक की खोज में जाते देखा तो जिज्ञासा में उन्होंने हमें घेर लिया।

निदेशक को देखते ही फांग पुरानी थ्येनचिन शैली में उनके कदमों पर लेट गया, वह फर्श पर अपना सिर पटककर उन्हें प्रणाम करने लगा। यह चौंकाने वाली बात थी कि परिवार के एक बूढ़े की मृत्यु के बाद यह पुरानी प्रथा हमारे कारखाने में आ गई थी। मैंने फांग से इसकी कल्पना भी नहीं की थी। निदेशक चिन भी नहीं समझ पाए।

घबराहट में उन्होंने खड़े होने में उनकी मदद की, "कामरेड फांग! यह आप क्या कर रहे हैं?"

फांग कृतज्ञता से अभिभूत थे। पर निदेशक की भावुकता देखकर वह हकलाते हुए इतना ही बोल पाए, "निदेशक चिन, आपको धन्यवाद! यदि आपने मेरे घर गाड़ी नहीं भेजी होती तो मेरे पिता की लाश न जाने कितने दिनों तक पड़ी रहती। अब तक तो लाश से बदबू भी आने लगी होती। मेरे स्वर्गीय पिता अवश्य ही आपको धन्यवाद दे रहे होंगे! धन्यवाद…"

निदेशक चिन ने फांग का कंधा थपथपाकर सांत्वना देनी चाही, पर नाटे निदेशक का हाथ संभवत : लंबे मजदूर के कंधे तक नहीं पहुंच पाता, इसलिए फांग का हाथ थामकर उन्होंने गंभीरता से कहा, "बहुत हुआ। आजकल जिसके पास संपर्क है, वह उसका फायदा उठाता है और जिसके पास पद है, वह उसका इस्तेमाल करता है। पर उन मजदूरों का क्या होगा, जिनका कोई संपर्क या प्रभाव नहीं है? शायद यही कारण है कि एक तो मजदूरों और नेताओं के बीच विरोध बना हुआ है और दूसरे, मजदूर 1958 के पहले की तरह काम नहीं कर रहे हैं। हम शिकायत करते हैं कि वे आत्मकेंद्रित हो गए हैं और केवल अपने हितों के बारे में सोचते हैं। पर मुझे लगता है कि जब उनके सामने कोई मुसीबत आती है तो कोई उनकी परवाह नहीं करता। ऐसे में यदि वे अपनी देखभाल नहीं करेंगे तो कौन करेगा?"

निदेशक चिन की साफगोई से मुझे आश्चर्य हुआ। वह अभी-अभी आए थे और अपने पुराने दोस्तों की तरह मजदूरों से साफ-साफ बात कर रहे थे। उनकी बातचीत में मजदूरों का गुस्सा भी प्रकट हो रहा था।

निस्संदेह, निदेशक की ये बातें मजदूरों के दिल में एकदम जा बैठीं। मजदूरों की प्रशंसाभरी नजरों व फुसफुसाहट से मैं यह कह सकता था कि निदेशक चिन ने अपनी स्पष्टवादिता से मजदूरों पर किसी बड़ी सभा में औपचारिक रूप से 'शपथ-ग्रहण' करने वाली भाषा की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभाव डाला था।

मजदूरों ने गर्मजोशी से नए निदेशक का स्वागत किया, यह देखकर सचिव बेहद खुश थे। उन्होंने निदेशक से कहा, "आप स्वयं देखें, यहां के मजदूर कितने अच्छे हैं। वे सब आपका स्वागत कर रहे हैं।"

निदेशक चिन बढ़कर फांग के पास गए और सुबह फोन पर उनसे कही बात को फिर से दोहराया, "वानछंग, कोई भी मरने के बाद नहीं लौटता। आप भी परेशान न हों। कुछ दिन आराम करें और अंतिम संस्कार के सारे कार्य निपटाएं। अपना ख्याल अवश्य रखें।"

फांग वानछंग ने शरमाते हुए कहा, "नहीं!" वह इतना प्रभावित थे कि अपनी बात नहीं कह पा रहे थे। "मैं आराम नहीं करना चाहता। मैं यहां काम करने आया हूं।" इतना कहकर वह कपड़े बदलने चले गए। निदेशक चिन के कहने पर भी उन्होंने आराम नहीं किया और जरूरत से ज्यादा समय नहीं लिया। परिवार के सदस्य की मृत्यु पर मिलने वाली तीन दिनों की छुट्टी में उन्होंने केवल डेढ़ दिनों की छुट्टी ली।

सचिव ल्यू निदेशक चिन को दूसरी वर्कशॉप में ले गए। मैं अपने कार्यालय की तरफ जाने के लिए मुड़ा, तभी भीड़ के पीछे खड़े उपनिदेशक ल्वो पर मेरी नजर पड़ी। वह सिगरेट पीते हुए ल्यू और चिन को जाते देख रहे थे। उनके चेहरे के सारे दाग साफ-साफ दिखाई दे रहे थे। उनके चेहरे के दाग उनके मूड के बैरोमीटर हैं। जब वह खुश होते हैं तो दाग दिखाई नहीं पड़ते, पर चिढ़े या नाराज होते हैं तो चेहरे के लाल होने पर सारे दाग सफेद हो जाते हैं।

वह फांग के पास गए और हंसते हुए बोले, "फांग वानछंग, मैं सोच भी नहीं सकता था कि तुम्हारे जैसे मजबूत आदमी की टांगें इतनी कमजोर होंगी। किसी ने तुम्हें कार दिलवा दी और तुम घुटनों के बल बैठ गए।"

फांग वानछंग ने हकलाते हुए पूछा, "उपनिदेशक ल्वो, आप क्या…?"

ल्वो का स्वभाव कुत्ते जैसा है। वह बिना किसी चेतावनी के भौंकने लगते हैं और बिना किसी कारण के काट खाते हैं। मैंने उन्हें न देखने का बहाना किया और सिर झुकाए अपने कार्यालय की तरफ बढ़ा। फिर भी, वह पीछे से दौड़े आए और मेरे साथ चलने लगे।

"लाओ वेइ, अपने नए बॉस सचमुच लोगों का दिल जीतना जानते हैं।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। जब निदेशक सींग भिड़ाते हैं, मैं बीच में नहीं पड़ता। मैं किसी के भी साथ नहीं रहता। फिर भी मैं अनुमान कर सकता हूं कि अपना छोटा रासायनिक कारखाना शीघ्र ही झगड़े का अड्डा बनने वाला है।

23 मार्च, 1979

"निदेशक चिन ने काम संभालने के साथ एक जरूरतमंद मजदूर को दूसरी इकाई से कार मंगवा कर दी।" यह समाचार कारखाने में तेजी से फैल गया। हर बार दूसरे को कहने के साथ इसमें कुछ जुड़ता गया– यहां के लोग आसानी से संतुष्ट होते हैं और आसानी से भड़क जाते हैं।

2 अप्रैल 1979

आज मैं निदेशक चिन के साथ कंपनी रिपोर्ट पेश करने गया। जीप में बैठ हम दोनों में काफी देर तक कोई बात नहीं हुई। अचानक उन्होंने मुझसे एक अप्रत्याशित सवाल पूछा, "कुत्ता भी अपनी गली में शेर होता है– यह पंक्ति किस ऑपेरा की है?"

"शाच्यापांग," मैंने कहा।

हम दोनों फिर से चुप हो गए, पर मैंने इस सवाल का मतलब अच्छी तरह समझा।

जीप से उतरकर कंपनी के कार्यालय में जाते समय निदेशक चिन ने मुझसे कहा, "हम अपनी रिपोर्ट सबसे पहले पेश करेंगे। मीटिंग के

आरंभ में हर आदमी भद्रता से पेश आता है। सभी बड़े अधिकारी काम निबटाने की जल्दी में नहीं रहते, आरंभ में वे दूसरों की बातें भी ध्यान से सुनते हैं। हमारे कारखाने जैसे छोटे कारखाने की रिपोर्ट अन्यथा बीच में दब जाएगी। मीटिंग आरंभ होती है तो सभी अधिकारी ध्यान से सुनते हैं। बाद में बूढ़े अधिकारी थक जाने पर सिगरेट व चाय पीने लगते हैं या टॉयलेट जाते हैं, इसलिए रिपोर्ट पर कोई ध्यान नहीं देता।"

उनकी बात सही थी, पर मैं उनके बारे में थोड़ा चिंतित था। अभी कारखाने में आए उन्हें एक महीना भी नहीं हुआ था। भला वह क्या रिपोर्ट पेश करेंगे?

कंपनी ने सभी निदेशकों को इस मीटिंग के लिए बुलाया था। सचिव ल्यू को आशंका थी कि निदेशक चिन को कारखाना आए अभी अधिक समय नहीं हुआ और वे सारी परिस्थिति से परिचित नहीं हैं। अपने सहज स्वभाव के अनुसार उन्होंने सलाह भी दी कि उपनिदेशक ल्वो को भेजा जाए। मुझे मालूम था कि ल्वो इस मीटिंग में जाने के लिए उत्सुक भी थे। पर निदेशक चिन ने हंसकर कहा, "मेरे जाने से भी वही बात होगी।" मुझे नहीं मालूम कि वह ल्वो मिंग को इस मौके से वंचित करना चाहते थे या अपने नए पद के कारण इस मौके को स्वयं खोना नहीं चाहते थे। अवश्य ही यह उनकी बड़ी सूक्ष्म चाल थी।

मीटिंग आरंभ होने पर बोलने वाले वह पहले व्यक्ति थे। उन्होंने रिपोर्ट अच्छी तरह पेश की। उन्होंने बताया कि कैसे फांग वानछंग ने तीन दिनों की छुट्टी में से केवल डेढ़ दिनों की छुट्टी ली। उन्होंने मजदूरों की प्रशंसा की, अपने बारे में कुछ भी नहीं बताया। उन्होंने नेताओं को यह विश्वास दिला दिया कि वह बिल्कुल समर्थ हैं। बाद में कंपनी के अधिकारियों ने हमारे कारखाने की प्रशंसा की और यह हमारे कारखाने जैसी छोटी इकाई के लिए एक बड़ी बात थी!

मुझे पूरा विश्वास हो गया कि निदेशक चिन उतने साधारण नहीं हैं। दूसरी रिपोर्ट आने के साथ उन्होंने मुझसे धीरे से कहा, "लाओ वेइ, मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जा रहा हूं। आप अच्छी तरह टिप्पणी लेंगे

और दूसरे कारखाने के अनुभवों और कंपनी के अधिकारियों के सुझावों को ध्यान से सुनेंगे।" इसके बाद वह लगभग मिटिंग समाप्त होने के समय लौटे। यह आश्चर्य की बात थी।

25 अप्रैल, 1979

एक के बाद दूसरी आश्चर्यजनक घटनाएं होती हैं। इन दिनों उपनिदेशक ल्वो के चेहरे के दाग नहीं दिख रहे हैं। अधिकार जमाने की प्रतिद्वंद्विता इतनी जल्दी कैसे समाप्त हो गई? ल्वो मिंग आसानी से हार मानने वाले व्यक्ति नहीं हैं। क्या उन्होंने निदेशक चिन से हार मान ली? पर यह संभव नहीं है।

आज दोपहर में जब मैं भोजनालय के कार्यालय लौटा तो निदेशक चिन मेरे कमरे में किसी से फोन पर बात कर रहे थे। उपनिदेशक चापलूसी की मुद्रा में खड़े थे। "···उसका नाम ल्वो चिंगय्वी है। हां, ल्वो··य्वी। वह मेरी रिश्तेदार है। नहीं, आप यह कह सकते हैं या नहीं? यह काम हो जाना चाहिए। आप इस सप्ताह के अंत तक मुझे बता दें। ठीक है···अच्छी बात है···निश्चित है।"

सब कुछ स्पष्ट हो गया। निदेशक चिन हमेशा ऐसे ही दूसरों का दिल जीतें, इससे मैं सहमत नहीं हो सकता। पर मैं उनकी चालाकी की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। ल्वो मिंग जैसे सहायक के साथ काम करना आसान नहीं है, वह इस कारखाने के अंदर-बाहर से परिचित हैं और उनका समर्थन करने वाले लोग भी हैं। यदि निदेशक चिन ल्वो मिंग को संभाल लेते हैं तो उनकी स्थिति मजबूत हो जाएगी। मैंने नहीं सोचा था कि वह ऐसा कुछ भी कर सकते हैं। तभी तो कुछ मजदूर उनकी पीठ पीछे कहते हैं कि वह बड़े 'धूर्त' हैं!

10 मई, 1979

निदेशक चिन के साथ मैं ब्यूरो की मीटिंग में गया था। थोड़ी देर बैठने के बाद उन्होंने धीरे से कहा, "लाओ वेइ, टिप्पणी अच्छी तरह लें। मैं एक मिनट के लिए बाहर जा रहा हूं।" कंपनी की मीटिंग हो

या ब्यूरो की, वह हमेशा ऐसे ही करते हैं। आखिर बाहर जाकर वह करते क्या हैं?

थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद मैं भी बाहर निकला। मैंने सोचा कि जरा उन्हें देखूं। रासायनिक ब्यूरो भवन के अनेक कमरों के दरवाजे गर्मी पड़ने के कारण खुले हुए थे। निदेशक चिन हर मंजिल पर जाकर लोगों से मिल रहे थे। पहली से चौथी मंजिल तक वह हर कमरे में गए, हर जगह उनका व्यवहार ऐसा था जैसे पुराने दोस्त से मिल रहे हों। उन्होंने हर सेक्शन के प्रधान और कार्यकर्ता का अभिवादन किया और उनसे हंसकर बात की। वह हर जगह अपनी जेब में महंगी सिगरेट लेकर गए और बड़ी उदारता से पीने वाले को दीं। कभी-कभी दूसरों का कप उठाकर पुराने दोस्त की तरह उसी कप से चाय पी ली। केवल वहीं सिगरेट नहीं बांट रहे थे, दूसरे भी उन्हें सिगरेट पिला रहे थे। पर वह सभी सेक्शन के लोगों से अच्छी तरह परिचित जान पड़े। उन्होंने कभी उनसे गंभीर बाते कीं और कभी हंसी-मजाक किया। थोड़े ही समय में कई घंटे बीत गए।

हमारी छोटी इकाई रासायनिक ब्यूरो की नजर में शायद बहुत छोटी और महत्वहीन थी। इस साधारण कारखाने का निदेशक ब्यूरो में हंसी-मजाक करते हुए घूम सकता है और अपने से बड़े कार्यकर्ताओं से भी बातें कर सकता है– यह उल्लेखनीय बात है। इस संदर्भ में मैंने उन्हें साधारण समझा।

मीटिंग के बाद कारखाने लौटते समय मैंने निदेशक चिन से पूछा, "मैंने सुना है कि कंपनी और ब्यूरो में आपके दोस्त हैं। क्या यह सही है?"

उन्होंने मेरी तरफ देखकर हंसते हुए कहा, "क्या आपने आज सबों को नहीं देखा?"

मैं अपना असमंजस नहीं छिपा सका।

उन्होंने खुलकर कहा, "लाओ वेइ, थोड़े समय में मैं जितना जान पाया हूं, आप एक बड़े अच्छे क्लर्क हैं। जब आप लिखते हैं तो तेज

और सुंदर लिखते हैं। दिनभर आप मेहनत से काम करते हैं, किसी भी निदेशक से कहीं ज्यादा व्यस्त रहते हैं। पर आप एक सीमा तक किताबी कीड़े हैं और चीजों को सीधे रूप में देखते हैं। मैंने तो यही सीखा है। पूंजीवादी समाज में पैसे से हर काम हो सकता है। अपने देश में सारा काम संपर्क से होता है। यह स्थिति अगले चार-पांच वर्षों में नहीं बदलने जा रही है। हमारा कारखाना छोटा है और वहां छोटे कार्यकर्ता हैं। हमारी प्रतिष्ठा और पहुंच नहीं है। यदि हम अपने संपर्कों का फायदा नहीं उठाएंगे, यदि डोर अपनी तरफ नहीं खींचेंगे तो हम कभी आगे नहीं बढ़ पाएंगे।"

भयंकर दृष्टिकोण! मैं नहीं बता सकता कि मैं उनसे घृणा करता हूं या उनका सम्मान करता हूं।

12 मई, 1979

उपनिदेशक के हंसते चेहरे से सारे दाग लगभग गायब हो गए। उन्होंने खुश होकर मुझे बताया, "लाओ वेइ, आप मेरी एक मदद कर दें। क्या आप आज रात निदेशक चिन को अपने साथ मेरे घर खाने पर ले आएंगे? मुझे डर है कि वह नहीं आएंगे, इसलिए आपसे कह रहा हूं।"

मैंने मन ही मन सोचा, "आप बड़े क्षुद्र आदमी हैं। बेटी की नौकरी के बदले आप उन्हें खाना खिलाना चाहते हैं।" फिर यह सोचकर कि ल्वो मिंग पहले एक अप्रशिक्षित पम्प मजदूर थे, बाद में संयोग से पार्टी में आ गए और धीरे-धीरे उन्नति कर उपनिदेशक बन गए। ऐसे आदमी से और उम्मीद भी क्या की जा सकती है? फिर भी मैं उनके घर खाने पर नहीं जाना चाहता था।

पहले जब भी ऐसा कोई अनचाहा निमंत्रण मिला, मैंने हमेशा पत्नी और बच्चे के बहाने उसे टाल दिया। कभी कहता कि पत्नी बीमार है तो कभी कहता कि बच्चे को बुखार है। किसी न किसी बहाने मैं पीछा छुड़ा लेता था। मैंने आज भी एक बहाना बनाया, "मेरे बच्चे को

निमोनिया हो गया है। मुझे सीधे घर लौटकर उसे अस्पताल ले जाना है।"

ल्वो ने कठोर नजरों से देखते हुए कहा, "मैं जानता हूं, यह मेरी गुस्ताखी है कि एक साधारण उपनिदेशक होकर एक महत्वपूर्ण क्लर्क को अपने घर आने के लिए कह रहा हूं। फिर आप ऐसा करें। आप निदेशक चिन के साथ पहले मेरे घर आएं और फिर आपकी जो मर्जी हो करें।"

कोई चारा न था। ल्वो चले गए और मैं स्वयं को गाली देने के सिवा कुछ न कर सका, "यदि मेरे बेटे ने क्लर्क बनने का फैसला किया तो मैं उसकी उंगलियां काट दूंगा!"

काम खत्म होने के पहले उपनिदेशक ल्वो की तरफ से मैं निदेशक चिन को निमंत्रित करने गया। उन्होंने खुशी-खुशी निमंत्रण स्वीकार किया और मुझे भी अपने साथ चलने के लिए कहा। मैंने फिर वही बहाना बनाया। निदेशक चिन की आंखें सिकुड़कर छोटी हो गईं। उन्होंने हंसते हुए कहा, "लाओ वेइ, आपको झूठ बोलना भी नहीं आता। अब से आप सच ही बोला करें। आपका चेहरा सच या झूठ बता देता है।"

मैंने झूठ बोला, "निदेशक चिन, मैं सच कह रहा हूं।"

उन्होंने ठहाका लगाया, "आप हमेशा एक ही बहाना बनाते हैं, उसे कभी नहीं बदलते। जरा दूसरों की बातें भी सुना करें। कारखाने के सारे लोग जानते हैं कि लाओ वेइ हमेशा एक ही बहाना बनाते हैं। कोई भी बात हो, यदि आप नहीं जाना चाहते तो आप कहते हैं कि पत्नी या बच्चा बीमार है। आपके जैसा तेज आदमी और भी कोई बहाना बना सकता है। आप हमेशा अपने घर के सदस्यों पर ऐसी विपत्ति क्यों लाते हैं?"

मैं झेंपते हुए हंसा और मैंने असहमति में अपना सिर हिलाया।

उन्होंने मेरा कंधा थपथपाया। "इतने सिद्धांतवादी न बनें। उपनिदेशक

के निमंत्रण को ठुकराकर आप कुछ हासिल नहीं कर लेंगे। हम उस शराब की एक बूंद तक नहीं छुएंगे, जिसकी कीमत दो य्वान से नीचे हो। हम दोनों साथ चलेंगे, ठीक है! उनके घर जाकर आपको कुछ नहीं बोलना है। केवल सिर झुकाकर खाना खा लेंगे आप। आप मुफ्त में मिले भोजन को नहीं ठुकरा सकते।"

आखिरकार मैं नहीं गया, पर मैं ल्वो मिंग के निमंत्रण का मतलब जानता हूं। उनकी बेटी ने आज ही से राज्य संचालित नंबर-10 रेडियो कारखाने में काम आरंभ किया है। निदेशक चिन निश्चित ही अपना काम बना सकते हैं, उन्होंने बड़ी आसानी से ल्वो मिंग जैसे आदमी को पालतू बना लिया।

जब पार्टी उत्साह, अनुशासन और कानून से काम नहीं बनता तो वह व्यक्तिगत उपकार और वफादारी करते हैं। मैं नहीं जानता क्यों, पर निदेशक चिन मेरे लिए आदरणीय नहीं हुए। पहली मुलाकात में बनी उनकी सादगी और सहृदयता की मेरी धारणा बाद की घटनाओं से धीरे-धीरे मिट गई।

(जून से सितम्बर 1979 तक की डायरी काट दी गई है।)

1 अक्टूबर, 1979

वरिष्ठ अधिकारी अपने मातहतों के आदर्श होते हैं। यदि नेता और कार्यकर्ता का संबंध जटिल हो तो समाज में भी उसी के अनुसार जटिलता पैदा होती है। और, यह जटिलता लोगों की राजनीति और सोच में प्रकट होती है।

ल्वो मिंग और निदेशक चिन आजकल दोस्तों जैसा व्यवहार करते हैं, पर सचिव ल्यू और, निदेशक चिन के संबंधों में तनाव आ गया है। पार्टी शाखा की मीटिंग में आज बोनस के सवाल पर सचिव और निदेशक का परस्पर विरोध सामने आ गया।

वरिष्ठ अधिकारियों ने सितम्बर में एक दस्तावेज भेजा था। उसके अनुसार कारखाने के मुनाफे से मजदूरों को बोनस देने की अनुमति दी

गई थी। हमारा कारखाना उपलब्ध सामग्रियों का प्रयोग करता है और अधिकांश कच्ची सामग्री अन्य कारखानों की अवशिष्ट सामग्री होती है। हमारा खर्च कम है, पर हम अच्छा मुनाफा कमाते हैं। जितना छोटा कारखाना हो, उतने कम मजदूर होते हैं और उन्हें बोनस देना आसान होता है। सितम्बर महीने का हिसाब करने पर पाया गया कि हर मजदूर को 50 य्वान बोनस में दिये जा सकते हैं। कार्यालय में काम करने वालों तक को 40 य्वान से अधिक मिल सकते थे। अधिकांश मजदूरों के मासिक वेतन के बराबर यह रकम थी।

शानतुंग प्रांत के सीधे और ईमानदार सचिव ल्यू आंकड़े सुनकर दंग रह गए। हालांकि उनकी आर्थिक स्थिति कारखाने के कार्यकर्ताओं से भी नीची थी। पर उन्होंने आपत्ति प्रकट की। "यह स्वीकार्य नहीं है। बोनस के रूप में देने के लिए यह राशि बहुत अधिक है।"

लोगों के चेहरे से मैंने अनुमान लगाया कि वे सचिव ल्यू की राय से सहमत नहीं हैं।

"यह अधिक क्यों है?" पैसे में कोई बुराई नहीं है। अधिक देना पाप नहीं है। 40-50 य्वान अतिरिक्त पाकर कौन खुश नहीं होगा? पर पार्टी कमेटी के किसी भी सदस्य ने सहमति या असहमति में मुंह नहीं खोला। वे निदेशक और सचिव को देखते रहे और फैसले की प्रतीक्षा में बैठे रहे। अधिक पैसे पाकर निश्चित ही उन्हें खुशी होती, मगर उनमें से कोई यह कहना नहीं चाहता था।

निदेशक चिन ने ल्वो मिंग से पूछा, "लाओ ल्वो, आपकी क्या राय है?"

उपनिदेशक ल्वो ने स्पष्ट स्वर में कहा, "हमें निर्देश के अनुसार बोनस बांटना चाहिए।"

सचिव ल्यू ने कहा, "यह दस्तावेज सभी उद्यमों को ध्यान में रखकर बनाया गया था। हमारे कारखाने की विशेष स्थिति है। हमें दस्तावेज की अस्पष्टता का फायदा नहीं उठाना चाहिए। यदि अधिकारियों को पता चला कि हम इतनी बड़ी राशि बांटने जा रहे हैं

तो समस्या पैदा हो सकती है।"

"यदि हम बोनस में ये पैसे नहीं बांटेंगे तो फिर इनका क्या करेंगे? क्या इन्हें अधिकारियों को दे दें?" ल्वो ने प्रतिकार किया।

सचिव ल्यू ने कहा, "हम इन्हें बैंक में रखेंगे। सबके हित में इन्हें भविष्य में खर्च करेंगे।"

निदेशक चिन खामोश बैठे सिगरेट पी रहे थे। उनकी राय का कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता था। वह संपर्कों से काम करने वाले व्यक्ति थे और पक्ष-विपक्ष को आंकने में निपुण थे। वह मजदूरों को हर महीने कुछ ध्यान देने का जोखिम नहीं उठा सकते थे। कंपनी और ब्यूरो के नेताओं और उनके संबंधों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तो वह क्या करेंगे? क्या राज्य के हित के खिलाफ नहीं होगा? क्या इससे राज्य और मजदूरों के संबंधों में कोई फर्क नहीं पड़ेगा? उन्हें क्या करना चाहिए? यह स्पष्ट था। वह इस छोटी समस्या के लिए कोई बड़ा दांव नहीं चलेंगे। खासकर जब पार्टी सचिव ने अपनी स्पष्ट राय रख दी है, वह इसका खुला विरोध नहीं करेंगे। सबके साथ मैंने भी यही अनुमान किया कि निदेशक चिन बोनस की स्वीकृति नहीं देंगे।

निदेशक चिन ने जब बोलना आरंभ किया तो उनकी पहली पंक्ति मेरी उम्मीद के अनुसार थी। उन्होंने कहा, "लाओ ल्यू ठीक कह रहे हैं। बोनस कुछ अधिक जरूर है···"

उपनिदेशक ल्वो का चेहरा लाल हो गया, "आप···क्या···"

निदेशक चिन ने उनकी तरफ मुड़कर हाथ से इशारा किया। निश्चित ही मीटिंग से पहले उन्होंने इस संबंध में बात की होगी। ल्वो मिंग को पहले ही सहमत कर लेने के बाद क्या वह वर्तमान स्थिति का फायदा उठाने के लिए अपनी राय बदल सकते थे? शायद उन्होंने सचिव ल्यू की राय जानने के लिए ल्वो मिंग का लिटमस पत्र की तरह प्रयोग किया था।

निदेशक चिन ने आगे कहा, "हम पूर्वी रासायनिक कारखाने के नेता हैं। हमें सबसे पहले अपने कारखाने की चिंता करनी चाहिए। हमें पूर्वी रासायनिक कारखाने के मजदूरों की चिंता करनी चाहिए। यदि हमने उन्हें नाराज किया तो बहुत बुरा होगा। अधिकारियों के निर्देश पहले ही मजदूरों को बता दिए गए हैं। यदि हमने निर्देशों के अनुसार बोनस नहीं दिया तो हम मजदूरों से किया वादा तोड़ेंगे। मजदूर हमें सिर्फ गालियां ही नहीं देंगे, अगर वे असंतुष्ट हो गए तो इसका बुरा असर उत्पादन पर भी पड़ेगा। इसलिए मैं पूरा बोनस 50 य्वान देने की सिफारिश करता हूं। यदि कंपनी ने कोई आपत्ति की तो हम बताएंगे कि हमने अधिकारियों के निर्देश के अनुसार कार्य किया है। यदि दूसरे कारखानों ने कुछ पूछा तो हम उचित जवाब दे सकते हैं, 'हमने कड़ी मेहनत की है, इसलिए उसका लाभ तो मिलेगा ही। हमने राज्य को अधिक मुनाफा दिया है, इसलिए स्वाभाविक तौर पर हमारा बोनस अधिक होगा ही।' आप लोगों की क्या राय है?"

कमेटी के अधिकांश सदस्यों ने निदेशक चिन से सहमति प्रकट की और प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। सचिव ल्यू की भी यही राय थी कि बोनस की इतनी बड़ी राशि उचित नहीं है, पर अपनी आपत्ति के लिए वह कोई तर्क न दे सके। हालांकि निदेशक चिन का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हो गया था, पर मीटिंग समाप्त होने पर सचिव ल्यू ने निदेशक चिन से रुकने के लिए कहा।

काम समाप्त होने के बाद कंपनी के लिए कुछ आंकड़े लिखने थे, इसलिए मैं भी रुका हुआ था। सचिव ल्यू के कमरे का रोशनदान

थोड़ा खुला हुआ था; उनके कमरे में चल रही बातचीत की आवाज मुझ तक आ रही थी। मैं सचिव ल्यू के स्वभाव के कारण चिंतित था; वह बड़े ईमानदार व्यक्ति हैं। उनमें कोई दोष नहीं ढूंढ़ा जा सकता। पहले निदेशक व उपनिदेशक के बीच के तनाव आता था तो वे इसकी चिंता दिनभर करते रहते थे। भूतपूर्व निदेशक वांग उनके स्वभाव के अनुकूल थे, इसलिए दोनों में खूब छनती थी। भूतपूर्व निदेशक वांग भी अपने अधिकारियों और मातहतों दोनों के प्रति सिद्धांतवादी और ईमानदार थे। उन्होंने कभी किसी को धोखा देने की कोशिश नहीं की, पर वह थोड़े संकीर्ण विचारों के थे और बहुत जल्दी नाराज हो जाते थे। साल पूरा होने के पहले ही उन्हें ल्वो मिंग के कारण जाना पड़ा।

अब योग्य और चालाक निदेशक चिन आए हैं। उन्होंने अधिकारियों और मातहतों से अत्यंत घनिष्ठ संबंध कायम कर रखा है। यहां तक कि ल्वो मिंग को भी अपने पक्ष में कर लिया। निदेशक और उपनिदेशक दोनों मिलकर अच्छा काम कर रहे हैं। सचिव ल्यू को भी चिंता नहीं करनी चाहिए। वह सचमुच इस बात को बहुत अधिक महत्व दे रहे हैं। भूतपूर्व निदेशक वांग और वह दोनों मिलकर ल्वो मिंग का मुकाबला नहीं कर सके। इस बार कैसे वह अकेले निदेशक चिन और ल्वो मिंग से निबट सकेंगे? एक ईमानदार आदमी चालबाज से लड़ाई नहीं जीत सकता। मैं उनके लिए और कारखाने के भविष्य के प्रति चिंतित हूं।

बगल के कमरे में सचिव ल्यू की आवाज ऊंची होती जा रही थी, "किसी नेता की सबसे बड़ी शर्त समस्याओं के प्रति सही विचार का होना है। आपको किसी समूह की सनक का शिकार नहीं होना चाहिए। आपको सभी पक्षों पर विचार करना चाहिए। लोगों को खुश करने के लिए राज्य की संपत्ति हथियाना तो और भी अनुचित है! निदेशक चिन, हमारे पास ऐसी शिकायत लेकर अनेक व्यक्ति आए हैं। आपको और अधिक कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए।"

किसी वरिष्ठ अधिकारी के लिए यह बड़ा आरोप था। मैंने तुरंत

आंकड़े एकत्र किए और बगल के कमरे के तनाव को कम करने के लिए वहां पहुंचा।

निदेशक चिन आराम से बैठे हुए थे। सारी बातें सुनने के बाद भी उनके चेहरे पर परेशानी नहीं थी। उन्होंने मुझे देखकर हंसते हुए कहा, "लाओ वेइ, आप अच्छे समय पर आए। आप भी यहां बैठें। अपने सचिव ल्यू ने मुश्किल कर दी है। आश्चर्य नहीं कि हमारे भूतपूर्व सहकर्मी उनके साथ कारखाने में काम न कर सके। हमारे सचिव की रुचि मजदूरों की मदद करने से अधिक इसमें है कि मैं मजदूरों के हक के लिए राज्य की संपत्ति हथिया रहा हूं? क्या मैं वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों के अनुसार काम नहीं कर रहा हूं?"

सचिव ल्यू ने हाथ हिलाकर कहा, "जब पैसे की बात आती है तो आप जितना अधिक बांटेंगे, उतनी कम शिकायत आएगी। यदि उसमें थोड़ी कटौती कर दें तो सारे मजदूर बड़बड़ाने लगेंगे। नेता होने के कारण हमें उनके दूरगामी कल्याण की बात सोचनी चाहिए। हमें मजदूरों को सिखाना है, उन्हें राह दिखानी है। क्या दस्तावेज में यह नहीं लिखा है कि हमें मुनाफे का कुछ हिस्सा सामूहिक हित में खर्च करना चाहिए?"

"यदि आप उन्हें पूरे 50 य्वान नहीं देंगे तो वे हमें गालिया देंगे। और फिर यदि आप कुछ काट भी लेते हैं तो आप उस राशि का क्या उपयोग करेंगे?"

"संकट की घड़ी के लिए रखेंगे। हां, यदि अगले महीने कोई बात हुई या कोई नियत कार्य पूरा नहीं हुआ तो हम बोनस दे सकते हैं। यदि हमने बैंक में पर्याप्त पैसे जमा करवा लिए तो हम मजदूरों के लिए आवास की व्यवस्था कर सकते हैं।"

"भूल भी जाएं, सचिव ल्यू! आपको मालूम नहीं कि आप क्या मुसीबत मोल ले रहे हैं।"

निदेशक चिन ने मुड़कर मुझसे कहा, "आप क्लर्क हैं और आपके सामने यह स्पष्ट होना चाहिए। यदि आप समय पर अधिकार

का प्रयोग नहीं करते तो वह बेकार हो जाएगा। यदि आपने बोनस देने की बात कही है तो आपको देना चाहिए। यदि आपने अभी बोनस नहीं दिया तो हवा बदल जाएगी और निर्देश पलट जाएगा। आप अभी भी मकान बनवाना चाहते हैं? हमारे जैसे छोटे कारखाने के लिए बीस-तीस फ्लैट बनाना मुश्किल होगा। स्थानीय निर्माण ब्यूरो, बिजली सप्लाई विभाग, जल सप्लाई विभाग और फिर कोयला भंडार तथा किराने की दुकान वाले भी कुछ मांगेंगे। हमारे लिए कितने फ्लैट बच जाएंगे। हम सारे पैसे अभी खर्च कर देंगे! हम अपना समय बर्बाद नहीं करेंगे! क्या गालियां सुनना अच्छी बात है? हमारे मजदूरों को इसमें से कुछ नहीं मिलने जा रहा है। यदि हम पैसे लेकर उन्हें दे देंगे तो वह सुरक्षित रहेगा और लाभदायक भी होगा।"

सचिव ल्यू ने सहमति या असहमति नहीं व्यक्त की।

निदेशक चिन ने सिगरेट का पैकेट निकाला और हमारी तरफ सिगरेट बढ़ाई। सचिव ल्यू ने मना कर दिया और अपनी जेब से सिगरेट निकालकर जलाई। निदेशक चिन ने इस पर ध्यान नहीं दिया और सचिव की तरफ बढ़ाई सिगरेट अपने मुंह से लगा ली। सिगरेट जलाकर लंबा कश लेने के बाद उन्होंने कहा, "आपकी सलाह 1958 के पहले कारगर हो सकती थी, अब नहीं हो सकती। हमारे सामने चुनौतियां हैं। हम वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश को नजरअंदाज नहीं कर सकते और न ही उसका पूरी तरह पालन कर सकते हैं। सचिव ल्यू, आपने स्वयं ऐसी स्थिति में कितनी मुसीबतें खड़ी कीं? 'सांस्कृतिक क्रांति' के दौरान गलती से जिन लोगों को जबरन बाहर भिजवाया गया था, बाद में सरकारी अनुमति मिलने पर कोई शहर आया तो तुरंत उसके लिए नौकरी की व्यवस्था नहीं की, आपने की? इस पर आपको कितनी गालियां सुननी पड़ीं? एक बात और बता दूं। यह अवरुद्ध किए गए मुआवजे के बारे में है। जिसने इस सिलसिले में दबाव डाला, उसे जल्दी पैसे मिल गए। जो धीरे-धीरे काम करता रहा, उसे पैसे नहीं मिले। इस तरह की बात हमेशा होती है। जो चौकन्ना नहीं रहता, उसे परेशानी झेलनी पड़ती है।"

निदेशक चिन ने ईमानदारी से अपनी बात कही। वह सचमुच सचिव ल्यू को थोड़ा लचीला बनाना चाहते थे। मगर मैंने महसूस किया कि सचिव ल्यू पर इसका कोई असर नहीं पड़ा, उल्टा वह बड़े विरोधी हो गए।

10 अक्टूबर, 1979

बोनस दिए जाने की घोषणा के बाद पूरे कारखाने में केवल बोनस की ही चर्चा थी। यह स्वाभाविक भी है। मुझे गुस्सा इस बात पर आ रहा है कि जितनी बातें मुझे मालूम हैं या जितनी बातें दर्ज की गईं, उनसे कहीं अधिक कारखाने के मजदूरों को मालूम हैं कि कल पार्टी शाखा की मीटिंग में इस बारे में क्या बहस हुई। सचिव ल्यू को सभी गालियां दे रहे हैं और निदेशक चिन की हर तरफ प्रशंसा हो रही है। सचिव ल्यू के प्रति किए गए अन्याय से मुझे धक्का लगा है।

इस मौके का फायदा उठाने के लिए निदेशक चिन ने मजदूरों और कर्मचारियों की एक सभा बुलाई ताकि सभी उनका समर्थन करें। मुझसे उन्होंने कुछ भी लिखने के लिए नहीं कहा और सभा में छोटा मगर उत्तेजक भाषण देकर अपनी दक्षता दिखाई।

उन्होंने कहा, "… इस महीने के बोनस में से एक पैसा भी नहीं काटा गया है। हमने सब दे दिया है। इस महीने का बोनस पाकर कुछ लोगों को आश्चर्य होगा। हम सिर्फ इतना ही कहेंगे कि आप मेहनत से काम करें। यदि हमारे कारखाने का मुनाफा और अधिक हुआ तो अगले महीने बोनस की रकम भी अधिक बड़ी होगी। आप निश्चिंत रहें, जब तक मैं हूं आपके बोनस में से एक पैसा नहीं काटा जाएगा और उसे देने में कोई देरी भी नहीं की जाएगी…"

2 नवंबर, 1979

यह रविवार बेकार चला गया। सुबह चार बजे से दोपहर के तीन बजे तक मैं तीन-चार छोटी मछलियां ही पकड़ पाया। घर लौटते समय

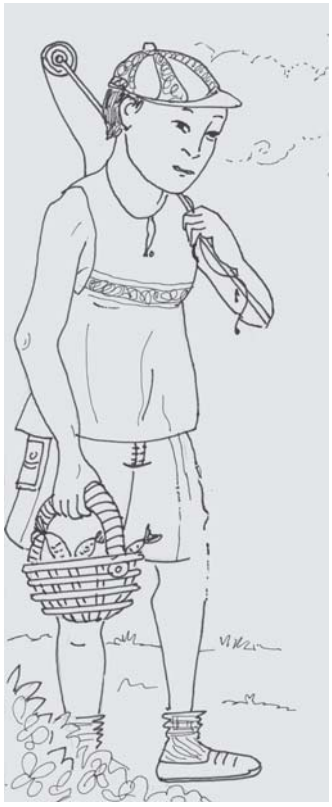

निदेशक चिन से मुलाकात हो गई। उन्होंने टोकरीभर मछलियां पकड़ी थीं। मैंने उनसे पूछा भी कि उन्होंने कहां से पकड़ीं। वह हंसकर टाल गए। मैंने अनुमान लगाया कि उनकी किसी मछली तालाब के चौकीदार से जानपहचान होगी, वहीं उन्होंने इतनी मछलियां पकड़ी होंगी। मेरे मना करने के बावजूद उन्होंने आधी मुझे दे दीं। उनके दरवाजे से गुजरते समय उन्होंने मुझे अपने घर में चलने का निमंत्रण दिया। मैं उनकी बात को नहीं टाल सकता था और दूसरे मेरी इच्छा भी थी कि उनका घर देखूं। मैंने उम्मीद की कि उनके जैसी पहुंच वाले आदमी का घर अवश्य भव्य होगा।

अंदर घुसने के साथ ही मुझे लगा कि उनका घर एकदम साधारण है। वह इतना साधारण था कि मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। कहीं निदेशक का घर ऐसा हो सकता है क्या?

उनकी बेटी कमरे में बैठी होमवर्क कर रही थी। उन्होंने उससे कुछ खाना बनाने और शराब लाने के लिए कहा। उसने उन्हें घूरकर देखा और अपनी किताब समेटकर अपनी दादी के कमरे में चली गई।

निदेशक चिन ने अपनी मां से खाने-पीने की व्यवस्था करने के लिए कहा। उनकी मां ने ना तो नहीं की, पर वे बड़बड़ाती रहीं और थोड़ी देर के अंदर ही सारी समस्याएं बता गईं।

हर महीने सत्तर ग्वान से अधिक कमाने वाले निदेशक चिन अपने वेतन का एक छोटा हिस्सा परिवार को देते हैं। बाकी से वह अच्छी

सिगरेट और शराब खरीदते हैं। हर रात पड़ोस के रेस्तरां से शराब पीकर घर लौटने के बाद थोड़ा खाकर सो जाते हैं। उनकी मां और दो छोटे बच्चों को उनकी पत्नी के वेतन के सहारे रहना पड़ता है। घर में उनकी प्रतिष्ठा कारखाने की प्रतिष्ठा की अपेक्षा बहुत नीची है।

पहले मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं। विडंबना यह कि इसके बावजूद उनके प्रति मेरी धारणा अच्छी बनी। उनके परिवार के प्रति पूरी सहानुभूति रखता हुआ मैं इस बात की सराहना करता हूं कि उन्होंने अपनी पहुंच का फायदा कारखाने को दिलवाया है, अपने परिवार के हित में उसका प्रयोग नहीं किया है।

31 दिसंबर, 1979

पाली खत्म होने की घंटी बजने के बावजूद किसी ने काम बंद नहीं किया, क्योंकि बैंक से निदेशक चिन का फोन आया था। कार्यालय आने के तुरंत बाद वह वित्त विभाग के कर्मचारी के साथ सुबह बैंक गए थे। कारखाने ने मजदूरों को 100 य्वान सालाना बोनस देना तय किया था, पर बैंक उसकी मंजूरी नहीं दे रहा था। निदेशक सारे दस्तावेज लेकर स्वयं बातचीत करने गए थे। वह सुबह वहीं रहे और दोपहर में खाने के लिए भी नहीं आए। मुझे मालूम था कि उन्होंने कार्यकर्ताओं को क्यों रोका था।

थोड़ी देर के बाद निदेशक वापस लौटे। उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था। उन्होंने कहा, "सबको काम करना है। हम इस रुपये को आज ही बांटेंगे।"

सारे कार्यकर्ता खुश थे। वित्त विभाग के कर्मचारी के निर्देश में उन्होंने सौ-सौ की गड्डियां बनाईं और उसे लाल लिफाफे में डाला।

सचिव ल्यू निदेशक चिन को मेरे कमरे में लाए। उन्होंने चिंता व्यक्त की, "निदेशक चिन, हम ऐसा नहीं कर सकते। मनचाहे ढंग से बोनस बांटना गलत है! दस्तावेज यह नहीं कहता कि आप साल के अंत में इतने अधिक पैसे बांट सकते हैं।"

निदेशक चिन हड़बड़ी में थे, उन्होंने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया, "दस्तावेज यह भी नहीं कहता कि मैं नहीं बांट सकता।"

"निदेशक चिन, यह आप गलती कर रहे हैं। क्या कारखाना नए साल से बंद होने जा रहा है?"

"रहने भी दें। आप असहनीय हैं!" निदेशक चिन ने अपना गुस्सा दबाने की कोशिश की। "मैंने कितनी बार आपसे कहा है, हमें जो मिला है, वह बांट देना है। और वह आज ही बांटना है। अन्यथा, मैं बैंक में अपना समय क्यों बर्बाद करता। निर्देश लगातार बदलते रहते हैं। समझे? कौन जानता है कि अगले साल क्या निर्देश आएगा? यदि बोनस रोकने का नया दस्तावेज आ गया तो हम चाहकर भी बोनस नहीं दे सकेंगे। फिर हमें सारे मजदूरों की गालियां सुननी पड़ेंगी।"

"अगर आपको उनकी गालियों का डर है तो मुझे गालियां सुनने दें।"

"पार्टी शाखा की मीटिंग में यह फैसला लिया गया है। आप स्वयं इसे नहीं बदल सकते। बोनस आज दिया जाएगा।" निदेशक चिन झटकते हुए दरवाजे से निकले। मैंने पहली बार उन्हें गुस्सा करते देखा था।

3 जनवरी, 1980

आज कार्यालय में आने के साथ मुझे अनेक दस्तावेज मिले। उनमें से एक दस्तावेज 1979 का बोनस रोकने से संबंधित था।

मैं दस्तावेज लेकर निदेशक चिन के पास गया। उन्होंने हंसते हुए कहा, "मैंने तो पहले ही कहा था।"

इसकी घोषणा के बाद पूरे कारखाने में हर जगह निदेशक की प्रशंसा के पुल बांधे जाने लगे। कार्यकर्ताओं ने भी इस संबंध में विचार-विमर्श किया। सभी यही कह रहे थे, "100 य्वान ठीक समय पर मिल गए। एक दिन भी देर हो जाती तो हम इन्हें खो देते। निदेशक

चिन दूरदर्शी और साहसी हैं।"

दोपहर में जन-प्रतिनिधि का चुनाव हुआ। कारखाने के मजदूरों और कर्मचारियों की संख्या के अनुसार नगर-क्षेत्र से हमें एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला था। इस बार का चुनाव लोकतांत्रिक था, वरिष्ठ नेताओं ने उम्मीदवारों को नहीं चुना था, सब कुछ जनता पर छोड़ दिया गया था।

कारखाने में चार मतदान केन्द्र बनाए गए। वर्कशॉपों में तीन मतदान केन्द्र थे और सभी विभागों के कार्यकर्ताओं के लिए एक अलग मतदान केन्द्र था। निदेशक चिन को मजदूरों के मतदान केन्द्रों पर भारी बहुमत मिला। कार्यकर्ताओं के मतदान केन्द्र में उन्हें केवल तीन मत नहीं मिले। ऐसे नतीजे की ही सबने उम्मीद की थी। एक अजीब बात हुई, मजदूरों के मतदान केन्द्र के एक मतपत्र पर किसी मजदूर ने लिखा था, "निदेशक चिन चालाक लोमड़ी है।"

मतपत्र गिननेवालों में से कुछ मजदूरों ने यह बात दूसरों से कह दी और निदेशक चिन पर लगाया गया लांछन हर तरफ फैल गया।

काम खत्म होने पर निदेशक चिन मेरे कमरे में आए। उनके हाथ में महंगी शराब की एक बोतल थी। "अभी गए नहीं, लाओ वेइ। आइए अपने गृहविहीन बेचारे निदेशक के साथ शराब पीजिए।" उन्होंने थैले से मूंगफली के दो पैकेट निकाले।

मैंने पूछा, "आप घर क्यों नहीं जा सकते?"

"कल शाम मेरी पत्नी से झगड़ा हो गया। अभी घर नहीं लौटना ही अच्छा होगा, वर्ना हम फिर से झगड़ने लगेंगे।" उन्होंने चाय की प्याली में शराब भरी और सिर उठाकर शराब मुंह में डाली।

मैंने कहा, "आप जिस तरह अपने परिवार की उपेक्षा करते हैं, यह कोई अच्छी बात नहीं है। अगले महीने से मैं आपके वेतन का अधिकांश हिस्सा आपके परिवार को दे आया करूंगा।"

वह हंसे, "रहने भी दें, शराब पिएं। एक ईमानदार अधिकारी को

भी परिवार का झगड़ा सुलझाने में मुश्किल होती है। मेरी पत्नी मेरे साथ बीस वर्षों से लड़ रही है, पर मेरा स्वभाव नहीं बदला। आप कैसे सोच रहे हैं कि आप सहायता कर सकते हैं? छोड़ें, शराब पिएं।"

बिना कुछ खाए उन्होंने सारी शराब खत्म कर दी। दो पैग पीने के बाद वह एक मूंगफली खाते थे। जितना अधिक पीते थे, शराब पीने की इच्छा उतनी ही बढ़ती जाती थी। थोड़ी ही देर में उनकी उभरी आंखें लाल हो गईं। अचानक उन्होंने मेरी आंखों में देखते हुए कहा, "लाओ वेइ, आजकल लोगों को खुश करना अत्यंत कठिन काम है। चाहे कुछ भी करो, आप उन्हें खुश नहीं कर सकते।"

मैं उनका आशय समझ रहा था। पर क्या जवाब दूं, यह नहीं समझ पा रहा था।

उन्होंने फिर से शराब पी और कहा, "मजदूरों को खुश करने के लिए मैंने अधिकारियों को नाराज कर दिया; दूसरी तरफ यदि अधिकारियों को खुश करूं तो मजदूर नाखुश हो जाएंगे। आपको मालूम है, किन तीन कार्यकर्ताओं ने मुझे मत नहीं दिया?"

मुझे आश्चर्य हुआ। उन्हें कैसे मालूम हो सकता है कि किसने उन्हें मत नहीं दिया? निश्चित ही उनका संदेह ल्यू पर होगा। यह स्वाभाविक भी था। कोई भी गंभीर और मर्यादित सचिव उन्हें मत नहीं दे सकता था। मैं इतना ही कह सका, "मुझे नहीं मालूम।"

निदेशक चिन ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा, "एक मत तो ल्वो मिंग का था, इसमें कोई संदेह नहीं।"

मैंने ल्वो मिंग के बारे में नहीं सोचा था और मुझे पूरी तरह विश्वास भी नहीं हुआ। "मेरा ख्याल है वह आपके बड़े प्रशंसक हैं।"

"हां, इसलिए कि मैंने मदद की है। उनकी मेरी जैसी पहुंच नहीं है। पर वह बड़े ही दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति हैं। वह ईर्ष्यालु भी हैं। उन्होंने मुझे मत नहीं देकर सही काम ही किया है।"

"तीसरा कौन हो सकता है?" मैंने पूछा।

अपनी नाक के ऊपर उंगली रखकर उन्होंने कहा, "मैं!"

मैंने सोचा, उन्होंने या तो अधिक शराब पी ली है या फिर मुझसे मजाक कर रहे हैं।

उन्होंने फिर से शराब पी और नशे की हालत में बहकते हुए बोले, "मैं सच कह रहा हूं। मुझे मालूम है तुम भी मुझे नीची नजरों से देखते हो। तुम मुझे धूर्त समझते हो। है न? पर तुम्हें मालूम नहीं, पहले मैं ऐसा नहीं था। समाज में जितना अधिक लोगों से मिलता हूं, मेरी खाल पर उतनी ही मोटी ग्रीज की परत चढ़ती जाती है। लोच मछली भी धूर्त होती है, वह कीचड़ में छिपकर लोगों के हाथ से बच जाती है। जब इंसान को चारों तरफ से ठोकरें लगती हैं, वह धूर्त हो जाता है। समाज जितना जटिल होता है, मनुष्य उतना ही धूर्त होता है। यह सीधी-सी बात है। सचिव ल्यू अच्छे आदमी हैं, पर उन्हे मेरे बराबर मत नहीं मिले। अब आप ही बताएं कि अच्छे आदमी होने का क्या फायदा है? यदि मैं उनके अनुसार नियमों का ख्याल कर कारखाना चलाऊं तो सारी व्यवस्था खराब हो जाएगी। मजदूर संतुष्ट नहीं होंगे। कारखाना सरकार को मुनाफा अदा नहीं कर सकता तो अधिकारी नाखुश होंगे। अधिक मत पाने से मैं खुश हूं, ऐसा न समझें। इसके विपरीत मैं बहुत ही उदास हूं। मुझे मालूम है कि सचिव ल्यू ने मुझे अपना मत नहीं दिया, पर मैंने उन्हें अपना मत दिया।"

"निदेशक चिन, आपने बहुत शराब पी ली है।" मैंने उनकी मदद की और उन्हें रात की ड्यूटी वाले व्यक्ति के बिस्तर पर सुलाया। "आप थोड़ी देर यहां लेटे रहें। मैं घर से आपके लिए कुछ खाने को ले आता हूं।"

दोपहर में उन्हें मत देने का मुझे अफसोस हुआ। हालांकि उन्हें भारी बहुमत मिला था, पर वह कभी भी जनता के सही 'जन-प्रतिनिधि' नहीं हो सकते।

मुझे पूरा विश्वास है कि अगली बार चुनाव हार जाएंगे।□

हांग इंग : एक परिचय

हांग इंग का जन्म थ्येनचिन में 1944 में हुआ। 1959 में जूनियर स्कूल में स्नातक होने के बाद इन्होंने थ्येनचिन जन कला थियेटर में मंच डिजायनर के रूप में काम किया और 1970 में वहीं कथा-लेखिका बन गईं। 1980 में आपने चीनी नाटककार संघ की सदस्यता प्राप्त की। आजकल आप थ्येनचिन लेखक संघ की काउन्सिल की सदस्या हैं तथा अब इनका पूरा समय लेखन को ही समर्पित है।

चीन लोक गणराज्य की तीसवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा आयोजित कथा-लेख प्रतियोगिता में इनके 1978 में लिखे ***विवाह*** को द्वितीय पुरस्कार मिला। 1980 के पश्चात इनकी अनेक लघु कहानियां प्रकाशित हुई हैं जिनमें ***शुभारम्भ*** तथा ***एक चतुर अंधी लड़की*** उल्लेखनीय हैं।

सेल्सगर्ल

1

सप्ताह-व्यापी मतगणना के परिणाम ने मेरी स्थिति बड़ी विषम कर दी। 1899 वोट पाकर, वह अगले दो प्रत्याशियों से कहीं अधिक मतों द्वारा प्रथम आई थी। मैं तो विस्मय से हक्की-बक्की रह गई थी।

स्टोर के सर्वश्रेष्ठ परिचारक का निर्वाचन ग्राहकों द्वारा करवाने का विचार हमारे नए मैनेजर तथा पार्टी सेक्रेटरी क्वो का था। "सर्वश्रेष्ठ की जानकारी ग्राहकों को ही होती है", क्वो का कथन था। "हमारे स्टोर को चलाने में उनकी भागीदारी से हमारे काम की बहुत उन्नति हो सकेगी।"

हमारे स्टोर के प्रवेश द्वार पर उसने हमसे एक बड़ी-सी मतपत्र-पेटी और मत-पत्रिकाएं रखवाईं और नित्य प्रति उनकी व्यवस्था के लिए एक विशेष व्यक्ति की नियुक्ति कर दी।

ग्राहकों द्वारा परिचारक-परिचारिकाओं की पहचान के लिए उसने प्रत्येक को अलग-अलग संख्याओं के बिल्ले लगाने को कहा।

क्वो के इस सर्वथा नए विचार से मेरी स्थिति बड़ी विचित्र हो गई थी, क्योंकि नौजवान संघ की सचिव होने के नाते हमेशा ही, लोगों के हाथ उठाने से पहले ही, मैं मतदान के परिणाम के बारे में सुनिश्चित रहा करती थी। पार्टी सेक्रेटरी से संकेत मिलते ही मैं संभावित प्रत्याशी की तलाश कर पार्टी अथवा संघ की बैठक में उसके नाम की सिफारिश करने तक की शुरूआती तैयारी कर लिया करती थी। मेरे

इशारे पर लोग समझ जाते थे कि उन्हें किसको निर्वाचित करना है।

पर अब तो मामला एकदम बदला हुआ था। क्वो ने मुझे कोई संकेत नहीं दिए थे। उसने तो केवल यही कहा था, "ग्राहकों को ही निर्णय करने दो।" और ग्राहकों ने एक ऐसी लड़की का चुनाव किया था जो न कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्या थी, न नौजवान संघ की। अरे, वह तो संभावित सदस्य तक नहीं थी। मुझे पूरा विश्वास था कि ग्राहक वांग श्येनशू, नम्बर 59, को निर्वाचित करेंगे जिसे स्टोर के व्यवस्थापकों द्वारा पिछले छह महीनों में बहुत उछाला गया था। पुराने सेक्रेटरी काओ के सुझाव पर उसे दूसरी वांग शूश्येन, यानी कि मैं, बनाने के लिए तैयार किया जा रहा था। दोनों के नाम भी प्रायः एक से थे। मैं अपनी आयु के चौथे दशक में चल रही थी। मेरा कोई पुरुष मित्र नहीं था– लेकिन मेरे पास पद कई थे।

मैं स्टोर के नौजवान संघ की कमिटी की सचिव थी, स्टोर की पार्टी कमिटी की सदस्या थी, पुरानी अग्रवर्ती कार्यकर्त्री थी, नगर के नौजवान संघ की कमिटी की सदस्या थी, क्षेत्रीय महिला संघ की सदस्या थी, महिला–अग्रसर कार्यकर्त्री थी, देर से विवाह करने वाली आदर्श महिला थी। मैं वांग शूश्येन को भी अपने जैसी ही प्रभामयी बनाना चाहती थी। वह मेरे ही पुराने काउंटर पर काम करती थी और उसी ने ग्रुप लीडर का मेरा पुराना स्थान ग्रहण किया था।

भोर होने से पहले ही आ जाने, देर तक रुके रहने, फर्श झाड़ने–पोंछने, शौचालय की सफाई करने, नौजवान संघ की शाखा के लिए नियमित वैचारिक रिपोर्ट लिखने– सभी में वह हर प्रकार से मेरा ही अनुकरण किया करती थी। मेरी ही भांति वह भी अपने बालों को, बिना रिबन लगाए, उलटकर बांधा करती थी। उसकी छोटी–छोटी चोटियां गहरे रंग के रबर बैण्ड से बंधी रहती थीं। वह भी काम के वक्त पहनी गई जैकेट के नीचे एक सादा ब्लाउज ही पहने रहती थी जिसका रंग बार–बार की धुलाई के कारण फीका पड़ गया था। वास्तव में वह किसी आदर्श श्रमिक की हूबहू प्रतिमूर्ति थी। लेकिन उसे केवल

आधे ही वोट मिल थे।

चुनाव में विजयी हुई थी चिन लू, अर्थात स्वर्ण मृगी। वह मिठाई के काउंटर पर खड़ी हुआ करती थी। उसका नम्बर तो था 163 परन्तु वे सभी नौजवान जो पास की स्टील रोलिंग मिल से प्रायः हमारे स्टोर में आ धंसते थे, उसे 'नम्बर एक' कहा करते थे। जब तक मुझे यह पता नहीं चला कि वे लोग लड़कियों को उनके रूपरंग के आधार पर नम्बर दिया करते थे, मैं उनकी इस बात का मतलब नहीं समझ पायी थी। केवल इसी आधार पर उसे आदर्श कार्यकत्री चुने जाने के अयोग्य ठहरा दिया जाना चाहिए था। परन्तु अब उसका सुन्दर चेहरा मुझे चुनौती दे रहा था।

2

पुरस्कार अगले सप्ताह एक सभा में बांटे जाने वाले थे जिसमें हमारे नेतागण, समाचारपत्रों तथा रेडियो से संलग्न पत्रकार, दूसरे स्टोरों के हमारे सहयोगी तथा ग्राहकों के प्रतिनिधि भी शामिल होते। मैंने क्वो को खोजकर उसे सुझाया कि हमें परिणाम तब तक घोषित नहीं करने चाहिए जब तक पहले हम इस समस्या पर आपस में बातचीत न कर लें, ताकि बाद में हमारी परिस्थिति खराब न हो जाए। क्वो मुझसे सहमत हो गया। उसने उसी दिन सायंकाल परिवर्धित पार्टी कमेटी की मीटिंग बुला ली।

इस मीटिंग में मैंने तथा राजनीतिक कार्य विभाग के कार्यकर्ताओं ने चिन पर तीन आरोप लगाए। पहले, वह बेहद छिछले स्तर की थी जो अपने वस्त्रों के विषय में आवश्यकता से अधिक चिन्तित रहा करती थी। उसे स्टोर के कुछ ग्राहकों द्वारा स्टोर की 'सौन्दर्य साम्राज्ञी' चुना गया था। संभवतः ऐसे ही लोगों ने कुछ अन्य उद्देश्यों से उसके पक्ष में मतों का जुगाड़ कर लिया होगा।

दूसरे, उसे अपनी नौकरी पसंद नहीं थी। वह तो सांस्कृतिक केन्द्र के आयोजनों में मंच पर जलती-बुझती फुटलाइटों में, अपने कार्यक्रम उपस्थित करने के लिए कहीं अधिक उत्साहित रहा करती थी। तीसरे,

वह आमोदप्रिय चुलबुली लड़की थी। उसने कई बार अपने कमरे में लड़कों को मिठाई खाने को बुलाया था।

मजदूर संघ के अधिकारी तथा प्रचार विभाग के सदस्य इससे असहमत थे। उनका कहना था कि उसे जो मत प्राप्त हुए थे उनसे स्पष्ट था कि वह लोकप्रिय थी, अपने काम में चुस्त, योग्य तथा समर्पित थी। उनका विचार था कि समाजवादी स्पर्धा का अर्थ केवल अपने काम में ही स्पर्धा करना होता है। उनका तर्क था कि चूंकि ग्राहकों ने उसे ही चुना था, अतएव हमें ईमानदारी से चुनाव का परिणाम घोषित कर देना चाहिए।

क्वो अब तक केवल मुस्कराता रहा था। उसने बहस को यह कहकर समाप्त किया कि "हमें यह देखना चाहिए कि चुनाव प्रजातांत्रिक ढंग से पार्टी की देखरेख में सम्पन्न हो। पुरस्कार प्रदान करने के लिए सभा का आयोजन करने से पहले हमें वांग शूश्येन को चिन लू के विषय में और अधिक जानकारी हासिल करने तथा मजदूर संघ एवं प्रचार विभाग को हमारे ग्राहकों के विचार जानने का आदेश देना चाहिए।"

उस रात बिस्तर पर पड़ी मैं करवटें बदलती रही। मैं एक साथ प्रसन्न भी थी और परेशान भी। प्रसन्न इसलिए, क्योंकि अब मैं अपनी बात को साबित कर सकूंगी और परेशान इस विचार से थी कि नया-नया आने के बावजदू क्वो हमारे स्टोर के बारे में बहुत कुछ जानता था और हो सकता है कि वह कुछ निष्कर्षों तक जा पहुंचा हो। यह भी संभव है कि चिन ने उसकी कृपादृष्टि प्राप्त करने की व्यवस्था कर ली हो। उसे कायल करने के लिए मुझे कुछ अकाट्य तर्कों की आवश्यकता पड़ेगी।

भोर की पहली किरण के साथ ही मैं अपनी साइकिल पर स्टोर के मिठाई काउंटर की खाताबही की जांच करने जा पहुंची। मेरा इरादा चिन के सबसे कमजोर मर्मस्थल पर वार करने का था।

साइकिल से उतरते ही मैंने देखा कि शेड में एक चटख लाल रंग की साइकिल पहले से ही खड़ी है। इतनी भड़कीली साइकिल पर केवल वह ही चढ़ने की हिम्मत कर सकती थी। उसमें तरह-तरह के उपकरण लगे हुए थे- एक रिफ्लेक्टर, एक टांजिस्टर हार्न, लाल मखमल में लिपटा निचला ट्यूब, 'हरिण' मार्का इलेक्ट्राप्लेटेड ताला, विचित्र-सी टेल-लाइट और सामने मडगार्ड पर जड़ा चौकड़ी भरता एक हिरण। उसकी साइकिल भी ठीक उस जैसी ही थी।

मुझे इस बात से और भी ज्यादा खीझ हो रही थी कि वह इतनी जल्दी आ पहुंची थी। आखिर क्यों? क्या बही-खातों में उलट-फेर करने?...मैं मिठाई के काउन्टर की ओर लपकी। वहां मुझे कोई नहीं दिखा। बही-खाते भी ताले में बंद थे। मैंने वस्त्र बदलने वाले तथा टेबिल-टेनिस वाले कमरे में भी झांका और फिर पुस्तकालय में। उसका कहीं पता नहीं था। स्टोर अभी खुला नहीं था। गलियारे सूने पड़े थे। आखिर वह चली कहां गई?

फिर मुझे पांचवें तल्ले से गाने की हल्की-सी आवाज सुनाई दी। दौड़ी-दौड़ी मैं प्रेक्षागृह में पहुंची। वहां कोई नहीं था। गाने का स्वर और भी ऊपर से आ रहा था। उत्सुकतावश लोहे की सीढ़ियों से दो तल्ले ऊपर चढ़ती मैं छत पर जा पहुंची, जहां मैंने उसे गाना गाते पाया।

गाते हुए वह अपने शरीर को ऐसे तोड़-मरोड़ रही थी मानो वह नाच रही हो। मैं आज तक नाच देखने नहीं गई थी और मैंने विदेशी फिल्में भी बहुत कम देखी थीं। आजकल जिस विचित्र डिस्को डांस के लोग इतने दीवाने हैं, शायद वह वहीं नाच रही थी। मैं चिमनी के पीछे जा छिपी। उसे कोई देख रहा है, इस ओर से बेखबर वह अपने गाने में डूबी हुई थी।

उगते सूर्य की लालिमा से आकाश अब गुलाबी हो चुका था। झीने प्रकाश की उस पृष्ठभूमि में उसकी देह के वक्र उभार और भी अधिक मादक दिख रहे थे। लज्जा से मेरे कान लाल हो उठे। मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं।

वह निश्चय ही सुन्दर थी, जवान थी, जिन्दादिल थी। किन्तु पूर्वाग्रह से ग्रसित मुझे वह वीभत्स नजर आ रही थी। उसके गुलाबी गाल और होंठ मेकअप किए लग रहे थे। उसकी आंखें बड़ी थीं, उनमें चमक थी और उसकी बरौनियां सचमुच सम्मोहक थीं।

किन्तु इससे भी अधिक घृणित था उसकी आंखों में छाया उद्दाम निरंकुश भाव। ये वे आंखें थीं जो लोगों को हमेशा बेझिझक देखा करती थीं। और उसके चुस्त चटकीले कपड़े और वह तड़कीली-भड़कीली साइकिल! सचमुच उसमें उचित-अनुचित का विवेक था ही नहीं। तो वह इतनी सुबह, जब यहां कोई आसपास न हो, ऐसे निर्लज्ज काम के लिए आई थी! भला उस जैसी लड़की एक आदर्श कार्यकर्त्री कैसे हो सकती है?

मैं अंदर ही अंदर उबले जा रही थी कि उसने सहसा गाना रोक दिया और लड़खड़ाती हुई रेलिंग की ओर ऐसे बढ़ी मानो अभी वहां से कूद पड़ेगी। मेरा कलेजा मुंह को आ गया। मैं असमंजस में डूबी सोचने लगी कि मुझे दौड़कर उसे पकड़ना चाहिए या नहीं। तभी वह अचानक मुड़ी। रेलिंग का सहारा ले उसने एक गहरा निःश्वास छोड़ा, अपने लम्बे केशों को पीछे किया अैर कहने लगी, "मैं बेहद खाली-खाली और उत्पीड़ित महसूस किया करती हूं। मेरा समय काटे नहीं कटता। जल्दी ही मेरा चेहरा झुर्रियों से भर उठेगा, बाल सफेद हो जाएंगे..." यह कहते-कहते वह रो पड़ी और सिसकियां लेने लगी।

यह समझे बिना ही कि मैं क्या कर ही हूं, मैंने अपनी उंगलियां अपने चेहरे पर फिराईं और अपनी व्यर्थ बीत गई जवानी की स्मृतियों में खो गई ।

मैंने अपनी भावुकता पर नियंत्रण पाने की चेष्टा की। उसके अन्तर्तम की भावनाओं के परीक्षण करने के इस अपूर्व अवसर को मैं कदापि खोना नहीं चाहती थी।

अचानक उसने रोना बंद कर दिया और उसांसें भरते हुए आकाश की ओर बाहें उठाईं, "नृत्य और संगीत में मुझे अपना वक्त बिताने

दीजिए···।" और उसने पुनः पागलों की तरह घूम-घूमकर नाचना प्रारम्भ कर दिया। उसके अस्तव्यस्त हुए केश उसके चेहरे को ढंक रहे थे।

मैं चिन्तित हो उठी। इसे क्या हो गया? यह इतनी व्यथित क्यों है? शायद···यह कहीं पागल तो नहीं हो गई? किन्तु मैंने तुरन्त ही स्वयं को नकारा। नहीं, यही तो इसका सड़ा-गला असली व्यक्तित्व है।

मेरी खोज आशातीत सफल हुई थी। एक संतुष्ट मुस्कान होंठों पर लिए मैं चुपचाप सीढ़ियां उतर गई।

3

सारी सुबह मैंने मिठाई काउंटर के प्रधान के साथ हिसाब के खातों की जांच की, लेकिन मुझे कहीं कोई गड़बड़ी नहीं मिली। जब मैंने उससे पूछा कि क्या चिन को कभी मिठाइयां चुराते पाया गया है, तो उसने इनकार कर दिया था। अतः मैंने उसे अपने काउंटर पर वापस जाने दिया।

घंटों हिसाब में माथापच्ची करने के बाद भी कहीं कोई भूल न पकड़ पाने से मेरा दिमाग चकरा गया था। मामला आसान नजर नहीं आ रहा था जितना मैंने पहले सोचा था। मैंने स्वयं मिठाई के काउंटर पर जाकर यह पता लगाने का निश्चय किया कि उसकी लोकप्रियता का रहस्य क्या है।

स्टोर में बहुत भीड़ थी ही, मिठाई के काउंटर पर और भी ज्यादा भीड़ जमा थी। जो लोग शहर में काम से अथवा केवल मन-बहलाव के लिए आते थे, जिनकी शादी होने जा रही थी या जो आत्मीय स्वजनों अथवा मित्रों से मिलने जा रहे थे,

बच्चों के साथ खरीदारी करने आए माता-पिता सभी को मिठाइयां खरीदने की जरूरत थी। नाटी होने के कारण मैं स्पष्ट नहीं देख पा रही थी कि इस भीड़ के पीछे काउंटर पर कौन खड़ा था।

तभी मुझे युननान की शीश्वांगपानना की ताए कन्याओं में प्रचलित विशिष्ट अंदाज में सुनहरे क्लिप से बंधे घने घुंघराले बालों की झलक दिखाई दी जिसमें एक छोटी-सी चेन बंधी हुई थी, जो सिर हिलाने के साथ-साथ हिलती रहती थी। इस जानबूझकर किए गए दिखावे से मेरा माथा गर्म हो उठा।

जब मैं वहां खड़ी-खड़ी उसकी कोई भूल पकड़ने की चेष्टा कर रही थी तब भी मुझे स्वीकार करना पड़ा था कि वह अपना काम बड़ी निपुणता से किए जा रही है। उसने कतार में खड़े पहले आदमी से मुस्कराते हुए पूछा था कि उसे क्या चाहिए। उसका माल तौलते हुए ही उसने दूसरे ग्राहक से उसकी आवश्यकता जान ली थी और तीसरे से अपना विचार पक्का कर लेने को कह दिया था। इसी बीच उसने हिसाब लगा लिया था कि पहले ग्राहक को कितने पैसे देने हैं और बड़ी कुशलतापूर्वक गिनतारे पर उसकी जांच भी कर ली थी तथा प्रत्येक ग्राहक को उसकी रेजगारी का हिसाब भी समझा दिया था। ग्राहकों को उसकी निपुणता की प्रशंसा करनी ही पड़ रही थी।

अपनी व्यावसायिक दृष्टि से मैंने लक्ष्य किया कि वह केवल तराजू पर ही अपना सिर झुकाए खड़ी नहीं थी, बल्कि बीच-बीच में ग्राहकों से बातें भी करते हुए, उनकी ओर मुस्कराती भी जा रही थी। स्टोर के सभी परिचारकों से ग्राहकों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार की आशा की जाती है। मुझे स्वयं इस बात को समझने में काफी समय लगा था। तब कहीं एक आदर्श श्रमिक के रूप में मेरी अनुशंसा हो पाई थी। निश्चय ही उसे भी बड़ी मेहनत करनी पड़ी होगी।

किन्तु उसके छत पर के अश्लील प्रदर्शन याद आते ही प्रशंसा की मेरी समस्त भावनाएं तुप्त हो गईं। उस समय तो वह एक दूसरी ही औरत हो गई थी। यदि मैंने खुद अपनी आंखों से उसे वहां न देखा

होता, तो मुझे कदापि विश्वास न होता। मनुष्य का निर्णय केवल उसके काम से ही नहीं होता, कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है उसकी विचारधारा। वह चाहे जितनी अच्छी अभिनेत्री क्यों न हो, कहीं कुछ था जो उसके वास्तविक चरित्र पर ऐसा प्रकाश डालता था जिससे वह उद्‌घाटित हो जाता था। जैसे, उसके बालों में लगा भड़कीला हेयर क्लिप। और, उसके कान के पीछे लटकती वह सुनहरी चेन जो पुरुषों का ध्यान उसकी राजहंसिनी की जैसी श्वेत गर्दन की ओर बरबस आकर्षित कर लेती थी। निर्लज्ज, नखरेबाज!

कदाचित प्रशंसा अथवा उत्सुकता में भरे कुछ वे दर्शक भी, जिनका कुछ खरीदने का इरादा नहीं होता था, क्यू में आ लगते थे। इस व्यवसाय में तो अवश्य वृद्धि हो जाती थी, किन्तु ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करने का यह तरीका क्या घिनौना नहीं था?

मेरी विचार-शृंखला तब टूटी जब क्यू के अंत में खड़ी एक मां की गोद में मिठाइयों के लिए व्याकुल एक बच्चे ने रोना शुरू कर दिया।

उसे चुप कराने के जब सारे उपाय व्यर्थ हो गए तो उसकी मां ने उसे एक थप्पड़ मारा, जिससे वह और अधिक चीख-चीख कर रोने लगा। यह स्थिति देखकर चिन ने दूसरे ग्राहकों से पूछा, "साथियो, यह भद्र महिला कतार में सबसे आगे आ जाए तो कैसा रहे? इस नन्हें से बच्चे का इतना रोना ठीक नहीं।"

जब वे सभी राजी हो गए तो उन्हें धन्यवाद देकर उसने उस अनुगृहीत महिला से आगे आ जाने को कहा। लड़का तब भी बिलख रहा था। चिन ने उसे चुप कराने के लिए दो मिठाइयां दे दीं।

मेरा दिल डूबने लगा। स्टोर में व्यवस्था बनाए रखना आवश्यक तो था, किन्तु उसे इस प्रकार मिठाइयां नहीं बांटनी चाहिए। मैं सोचने लगी– क्या वह बहुधा ऐसा ही करती है?

भद्र महिला ने आपत्ति की। इस बीच चिन ने मिठाइयां तौलना

खत्म कर दिया था। उनमें से दो मिठाइयां निकालकर उसने महिला से कहा, "यह ठीक है न?" मिठाई के कुछ टुकड़ों को एक छोटे से कागज में लपेटकर उसने बाकी समस्त मिठाई अलग बड़े थैले में भरकर उसे बड़ी सफाई से बांधा। फिर उस थैले को महिला के थैले में रखने में मदद की।

मिठाइयों का छोटा पैकेट उसने महिला की जेब में यह कहते हुए डाला कि "यह घर जाते हुए आपके बच्चे के लिए है ताकि आपको बड़ा थैला खोलना न पड़े।"

"यह तो बड़ी समझदारी का काम कर दिया आपने," उसे धन्यवाद देते हुए महिला बोली।

मुझे चिन से हार मान लेनी पड़ी।

एक सूटकेस थामे एक फौजी सिपाही स्टोर में घुसा। क्यू के अन्त में खड़ा-खड़ा वह बार-बार घड़ी देख रहा थ। दो अन्य ग्राहकों को निपटाने के बाद चिन ने लक्ष्य किया कि फौजी सिपाही बाहर जाने लगा था। उसने पुकारकर पूछा, "आप क्या जल्दी में हैं?" "जी हां, मुझे अपने कैम्प लौटने के लिए गाड़ी पकड़नी है। अपने दोस्तों के लिए कुछ मिठाई ले जाना चाहता हूं।"

दूसरे ग्राहकों की रजामंदी से उसने सिपाही को क्यू में सबसे आगे आ जाने दिया। चलते वक्त सिपाही ने एक सैल्यूट मारा और मिठाइयां लेकर मुस्कराता हुआ स्टोर से बाहर निकल गया। कितना विचित्र लग रहा था यह सोचना कि इतनी पतित लड़की अपने काम में इतनी अधिक निपुण और उत्साही थी। आखिर असली चिन कौन-सी थी? वह छत वाली या यह काउंटर वाली? क्या किसी अनगढ़ पत्थर में खूबसूरत जेड जड़ा हुआ था? मेरे पूर्वाग्रहों से उत्पन्न संदेह, संतुष्ट ग्राहकों के साथ-साथ समाप्त होते जा रहे थे।

4

फौजी सिपाही के चले जाने के तुरन्त बाद ही स्टील रोलिंग मिल

के नौजवानों का दल भीड़ लगा आगे बढ़ आया और मांग करने लगा, "हमें भी जल्दी है। हमें भी पहले निपटा दीजिए।" दूसरे क्रुद्ध ग्राहक चिल्लाने लगे, "जाओ-जाओ, क्यू के अन्त में खड़े हो।"

स्टील मिल का लंबा ऊपरी कोट पहने एक लंबे, काले से नौजवान ने उनके भूरे बालों वाले नेता को पीछे धकेला और अधिकारपूर्ण स्वर में कहा, "होश में आओ, कतार में जाकर खड़े हो।"

भूरे बाल और उसका दल तो चुप हो गया, किन्तु वहां से हटा नहीं।

कदाचित चिन लंबे काले-से नौजवान से परिचित थी। उसने तनाव हल्का करने के इरादे से पूछा, "क्या आज आपकी छुट्टी का दिन है, मिस्टर ताए?"

इस पर भूरे बाल वाला हंस पड़ा, "वह मिस्टर ताए नहीं है। उसे ताएय्वी कहा जाता है?"

ताएय्वी एक प्रसिद्ध क्लासिकी उपन्यास ***लाल इमारतों का स्वप्न*** की नायिका है जो अपने सौन्दर्य तथा नाजुक स्वास्थ्य के लिए सुविख्यात है।

सभी ग्राहक हंस पड़े। उस नौजवान का काला चेहरा गुस्से से लाल हो उठा। उसने चिन को घूरा और फिर भूरे बाल की ओर झपटा, जो यह कहते पीछे हट गया कि "क्लासिकी चीनी भाषा में 'काले चमकदार जेड' को ताएय्वी कहा जाता है।"

चिन यह सुनकर खिलखिलाने लगी। नौजवान ने उसकी ओर गुस्से से देखा तथा भूरे बाल वाले के पीछे भागा।

भूरे बाल कतराकर एक खंभे के पीछे चला गया। उस नौजवान पर व्यंग्य कसते हुए बोला, "अब जबकि तुम नम्बर एक के बचाव के लिए आ गए हो तो अगर इस वक्त तुम उसे शादी का प्रस्ताव कर दोगे, तो वह तुम्हें जरूर स्वीकार कर लेगी।"

"चुप रहो, वरना मैं तुम्हारी खाल खींच लूंगा।"

भूरे बाल ने उससे फुसफुसाकर कुछ कहा। "है हिम्मत?" उसने उस नौजवान से पूछा था।

वे दोनों अन्य नौजवानों को लेकर क्यू के अन्त में खड़े होने चले गए। उनके हाथों में दस-दस ग्वान के नोट थे और उनके चेहरों पर धूर्त मुस्कान खेल रही थी।

अंदर ही अंदर मुझे चिन के प्रति चिन्ता हो रही थी। मैं स्वयं सेल्सगर्ल रह चुकी थी। ऐसी हालत में मेरे भी हाथ-पांव कांप उठते।

लेकिन वह तो उसकी तरह ऐसे देख रही थी मानो कोई अजीब बात हुई ही न हो। जब उस नौजवान की बारी आई तो उसने बड़ी नर्मी से उससे पूछा, "मैं आपके लिए क्या कर सकती हूं?"

वह सुर्ख पड़ गया। भूरे बाल वाले ने उसे पीछे से ठेला मारा। उसने पूछा, ''कौन-सी मिठाई सबसे अच्छी है? मुझे प्रत्येक की विशेषता बताइए ताकि मैं उनमें से छांट सकूं।''

चिन ने सिर हिलाया। फिर उसे और साथ ही प्रत्येक ग्राहक को सुनाते हुए कहने लगी, "यह तो आपकी अपनी पसंद पर निर्भर करता है। वैसे, आम तौर पर उत्तर की मिठाइयां दक्षिण की अपेक्षा ज्यादा मीठी होती हैं। उत्तर-पूर्व की सबसे ज्यादा मीठी हुआ करती हैं। अगर आप मिष्ठान-प्रिय व्यक्ति हैं तो आप पेइचिंग अथवा उत्तर-पूर्व की बनी मिठाई खरीदिए। दक्षिण में जहां गन्ना उगाया जाता है, लोग मिठाई की बजाय उसमें डाले जाने वाले पदार्थों और उसकी सुगन्ध की ज्यादा सराहना करते हैं। पेइचिंग अपने मक्खन के गोलों और फलों से बनी मिठाइयों के लिए मशहूर है। थ्येनचिंग की छीशिलिन कंफेक्शनरी की कॉफी की गंध वाली मिठाई और शराब की गंध वाली चाकलेट बहुत प्रसिद्ध हैं। शांगहाए की टाफियां भी उतनी ही मशहूर हैं। छुंगछिंग में भी अच्छी मिठाइयां बनती हैं। और क्वांगतुंग के लेमनड्राप इस देश में सबसे अच्छे माने जाते हैं... हमारे पास बीस से ज्यादा किस्म की तो सिर्फ टाफियां ही हैं। अब बताएं, आपको क्या चाहिए?"

लग रहा था कि वह शुद्ध पेइचिंग के उच्चारणों में संगीतात्मक स्वर में कविता-पाठ किए जा रही है। विस्तार से दिए गए उसके इस विवरण से सभी ग्राहक प्रभावित हो गये। जब तक उस नौजवान के साथियों की चुनौती-भरी निगाहें उस पर नहीं पड़ी, वह नौजवान तो वहीं ठगा-सा खड़ा रह गया।

"हर किस्म की एक-एक औंस दे दीजिए।" अब नौजवान ने कहा।

''सबको एक ही थैले में भर दूं?''

''जी नहीं, अलग-अलग थैलों में।''

भीड़ में बड़बड़ाहट का एक रेला-सा उठा।

''ऐसे ही खरीदते हो सामान? सिर्फ परेशान करना चाहते हो,'' एक बूढ़ा बोला।

''मत दीजिए उसको कुछ भी।''

नौजवान घबरा-सा गया, किन्तु भूरे बाल वाला तराजू पर अपना हाथ रख कहने लगा, "आप लोगों को इससे कोई सरोकार नहीं है। हमारी जैसे तबीयत हो वैसे सामान खरीदने का हक हमें है कि नहीं?"

भूरे बाल वाले को समझाने के लिए एक आदमी आगे बढ़ा। उसके साथ ही दल के दूसरे लड़के भी आगे बढ़ने लगे। जान पड़ता था कि झगड़ा होने ही वाला है। मैं बीच-बचाव करने चली गई। मुझे देखकर चिन मुस्कराई और बड़ी शान्तिपूर्वक ग्राहकों से कहने लगी "आप लोग परेशान न हों। मुझे सिर्फ एक मिनट लगेगा।"

हल्ला-गुल्ला ठंडा पड़ा तो उसने दल के बाकी लोगों से पूछा "और आप लोगों को?"

"उसी तरह दीजिए। हम भी सारी मिठाइयां चखना चाहते हैं।"

"एक-एक औंस?"

"दो-दो औंस। एक थैले में चार औंस," भूरे बाल चिल्लाया।

"तीन-तीन औंस। एक थैले में नौ औंस।"

"चार-चार औंस। हर थैले में एक पौंड दो औंस।"

ओफ्फोह! इसका मतलब होगा कि उसे कितनी ही बार मिठाई तौलनी पड़ेगी और उतने ही थैले बांधने पड़ जाएंगे! और बेचारी हिसाब कैसे लगाएगी? रेजगारी जल्दी-जल्दी कैसे वापस लौटाएगी?

उसने दल के पांचवें सदस्य से बड़े ठंडे कलेजे से पूछा, "और आप?" आप शायद हर मिठाई आधा-आधा पौंड लेंगे? बीस से ज्यादा किस्म की मिठाइयां हैं। कृपया तीस ग्वान निकाल रखिए।"

उस नौनवान ने अपनी जेब टटोली और मुंह बनाया, "मैं मिठाई-प्रेमी नहीं हूं। मुझे तो हर किस्म की सिर्फ 1.3 औंस के हिसाब से दे दीजिएगा।"

बदतमीजी की हद है! वे बदमाश उस नौजवान की तारीफ में मुंह बनाते, उसके साथ धक्कम-धक्का करने लगे। साथ-साथ चिन से कहते जा रहे थे- जल्दी कीजिए, जल्दी।

"ठीक है," उसने तराजू के पलड़े ठीक करते हुए कहा।" कुछ उत्सुक, कुछ परेशान और कुछ क्रोध में बौखलाए ग्राहक उसकी क्रियाओं को बड़े गौर से देख रहे थे। पल भर में ही जैसे एक चमत्कार सा हो गया! अपने बाएं हाथ से कुछ छोटे थैलों को कांउटर पर और दाएं हाथ से मुट्ठी भर मिठाइयां उठाकर वह तराजू पर रखती जा रही थी। फिर उसने बाएं हाथ से एक-एक कर थैले उठाने शुरू कर दिए और बड़ी सफाई से एक सेकिंड में उन्हें बांधती गई।

ग्राहकों की सांस थम गई थी और मैं आश्चर्य से सोच रही थी कि उसमें इतनी निपुणता कहां से आ गई। उसके हाथ इतने तेज और कुशल थे कि इस समय वह सेल्सगर्ल नहीं, कोई नर्तकी लग रही थी।

किन्तु इससे भी बड़ा आश्चर्य अभी होना बाकी था। वह अलग-अलग किस्म की मिठाई का वजन और दाम, उन्हें बांधते हुए, ऊंचे स्वर में बोलते जा रही थी और साथ ही गिनतारे पर, हवा में

उड़ती उंगलियों से मनके खड़खड़ाती उनका मिलान भी करती जा रही थी। उसका हिसाब एकदम सही हो रहा था। पैसे वसूल करते हुए उसने प्रत्येक ग्राहक को यह भी बता दिया था कि उसे कितनी रेजगारी वापस मिलेगी। उन सभी दुष्टों को निपटा चुकने के बाद, वह हिमालय जैसी शान्त खड़ी हो गई।

इस समूचे कांड के दौरान जो समस्त ग्राहक अब तक मुंह बनाए खड़े थे, उन्होंने ऐसे तालियां बजाईं मानो किसी नाटक का श्रेष्ठतम अभिनय देखा हो।

वह उस काले नौजवान को तब तक आंखें गड़ाए घूरती रही, जब तक वह शर्म से लाल नहीं पड़ गया। उसके सभी संगी-साथी पत्थर बने खड़े थे।

सारे दल को एक जगह बुत खड़े देख उसने मुस्कराते हुए पूछा, "और भी कुछ चाहिए आपको? हमारे पास चाकलेट बार, डिब्बा बंद मिठाइयां, तरह-तरह की टाफियां, जैली ड्राप्स, तिल की बनी मिठाइयां, मिंट ड्राप्स···।" फिर उसने गंभीरतापूर्वक बच्चों वाली पांच लालीपॉप भी निकालीं। दर्शक हंसी के मारे फट गए और भूरे बाल और उसका दल वहां से भाग निकला।

बड़ी शिष्टतापूर्वक उसने उन्हें मूर्ख बच्चे साबित कर दिया था। कितनी समझदार है यह लड़की! मुझे पूरा विश्वास हो गया कि अब ये लोग उसे कभी कष्ट नहीं देंगे। मुझे पता भी न चला और मैं उसकी ओर मित्रता से मुस्करा रही थी।

5

अपने दफ्तर लौटकर मैंने चिन के कमरे में उसके साथ रहने वाली लड़की रन श्याओमेइ को बुलवाया और उससे पूछा कि क्या यह सच है कि चिन अपने कमरे में प्रायः लड़कों को मिठाई खिलाने बुला लिया करती थी। पता नहीं क्यों, मैं इस बारे में साफ हो लेना चाहती थी।

लेकिन, रन का उत्तर सुनकर मैं खुश हो गई। उसने कहा कि चिन प्राय: लड़कों को गाने और बाजा बजाने के लिए बुला लिया करती थी। अब तक वह उन्हें दो सौ से ज्यादा किस्म की मिठाइयां खिला चुकी थी। ये मिठाइयां वह स्वयं खरीद कर ले जाती थी और उनसे उन्हें चखकर एक कापी में उनकी राय लिखवा लिया करती थी। रन ने मुझे यह भी बताया कि कई रात वह पत्थरों को कागज में लपेटकर उनका वजन अनुमान लगाने का अभ्यास करती रही थी।

मेरी आंखों से पर्दा हट गया था।

मैं मिठाई के काउंटर के प्रधान को दोष देने जा रही थी कि उसने मुझे अभी तक चिन के आदर्श व्यवहार के विषय में कभी कुछ बताया क्यों नहीं था, किन्तु तभी मुझे याद हो आया कि उसने तो निपुणता प्रदर्शित करने के लिए चिन का नाम प्रस्तावित किया था। मैंने ही उसका नाम काट दिया था, क्योंकि··· मेरी अन्तरात्मा ने मुझे ऐसा करने को बाध्य किया था।

उस शाम स्टोर के पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठक में मैंने अपनी जांच के परिणामों का ब्योरा पेश किया और पार्टी सेक्रेटरी क्वो ने उसकी सराहना की। यह निर्णय लिया गया कि चुनाव का नतीजा अगले दिन सुबह घोषित कर दिया जाएगा और पूर्व निर्धारित तिथि को सभा का आयोजन किया जाएगा। चिन को उसका भाषण तैयार करने में सहायता देने के लिए मैंने स्वेच्छापूर्वक स्वयं अपना नाम प्रस्तावित किया था ताकि मुझे उससे साफ-साफ बातें करने का मौका मिल जाए।

अगले दिन सबेरे ग्राहकों द्वारा चुने गये लोगों की फोटो स्टोर के प्रवेश द्वार पर रखे गए 'सम्मान पटल' पर लगा दी गई। विजयी होने के नाते चिन आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बन गई थी। किन्तु वह सदा की तरह अपना काम करती रही। हमेशा की तरह आज भी उसने फैशनेबल वस्त्र पहन रखे थे। क्या उसे इतनी भी समझ नहीं थी कि एक आदर्श श्रमिक को अधिक भड़कीले वस्त्र नहीं पहनने चाहिए? मुझे लगा कि जल्दी मुझे उससे इस बारे में बात कर लेनी चाहिए और

इसी बातचीत के बीच उसे अपना भाषण तैयार कर लेने को भी कह देना चाहिए। जैसे ही स्टोर बंद हुआ मैं सीधी उसके कमरे में पहुंची।

वह और भी अधिक खूबसूरत पोशाक पहने हुए थी और अपने जूतों पर पालिश कर रही थी।

मैंने पूछा, "तुम कहीं बाहर जा रही हो?"

वह हंस पड़ी। उसने मुझे अपने बिस्तर पर बैठाया। जब मैंने उसे बधाई दी तो वह उदासीन बनी रही।

मैंने उसे बताया कि उसे सभा में भाषण देना होगा और पूछा कि वह क्या बोलेगी। "ना-ना, मुझे भाषण देना बिलकुल नहीं आता," उसने शर्म से लाल होते और सिर हिलाते हुए कहा।

"उस दिन काउंटर पर खड़े-खड़े तो तुम बहुत अच्छा बोल रही थी," मैंने कहा, "चुनाव में तुम प्रथम आई हो। सो भाषण तो तुम्हें देना ही पड़ेगा। यह हमारे नेता का फैसला है।"

उसने बड़े असहाय भाव से मेरी ओर देखा, "तो मुझे बोलना ही पड़ेगा।"

मैंने गर्दन हिलाई।

"तो फिर ठीक है।"

जब मैंने उसे भाषण लिखने में मदद देनी चाही तो उसने पूछा, "आपका मतलब है कि वक्त से पहले ही मुझे भाषण तैयार कर लेना पड़ेगा?"

"कम से कम उसकी रूपरेखा तो लिख ही लो ताकि बोलते समय बहक न जाओ।"

"उस वक्त मेरे दिमाग में जो आएगा वही कह दूंगी।"

"उससे काम नहीं चलेगा।"

मैंने उसकी ओर से भाषण लिख देना चाहा था। किन्तु उसके

लिए पहले मुझे उसके विचार जानना आवश्यक था। मैं उसे यह तो नहीं बता सकती थी कि मैंने उसे छत पर नाचते देख लिया था। इसलिए उसे सुझाव-सा देते हुए मैंने कहा, "क्या तुम्हारे दिमाग पर पिछले कुछ दिनों से कोई बोझ है?"

विस्मित हो उसने उत्तर दिया, "क्यों? नहीं तो।"

"कल सुबह···" मैं हिचकिचा रही थी।

"कल सुबह? क्या हुआ था कल सुबह?" उसकी आंखें चौड़ी हो गईं।

मैं सोच ही रही थी कि उससे वह बात नर्मी से कैसे कही जाए, तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया।

उसने कहा, "अंदर आ जाओ।"

दरवाजा बंद रहा। वह उठ खड़ी हुई और ऊंचे स्वर में पूछने लगी "कौन है? अंदर क्यों नहीं आ जाते?"

फिर उसने जाकर दरवाजा खोला। वह आश्चर्य-चकित रह गई थी।

दरवाजे पर वही काला नौजवान खड़ा था। उसका चेहरा गुलाबी हो रहा था। उसने अपनी लंबी देह झुकाई और अस्पष्ट स्वर में कहने लगा, "मुझे बहुत खेद है, नम्बर 163, कामरेड चिन लू। मुझे आपका नाम 'सम्मान पटल' से पता चला है।"

चिन का स्तब्ध भाव अवज्ञा-भरे स्वर में बदल गया। फिर भी, उसने बड़ी शिष्टतापूर्वक उसे अंदर आने को कहा।

सुर्ख चेहरा लिए नौजवान पीछे हटने लगा था। "नहीं-नहीं, मैं आपकी बातों में बाधा नहीं डालना चाहता। मैं तो केवल यह कहने आया था।···''

मेरा अविवाहित हृदय धड़धड़ कर रहा था। वह क्या कहने आया था?

चिन मुस्कराई और उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखती रही।

घबराहट और संकोच में भरे उस नौजवान ने अपने उजले दांत दिखाते हुए खीस निपोरी और चिन के हाथ में एक पैकेट थमा दिया। तब जाकर मैंने गौर किया कि उसने शेव किया हुआ था। बाल कटवाए थे और ऊनी जैकेट में वह बहुत सुंदर लग रहा था। पैकेट बिना खोले ही चिन उसे अपने हाथों में ऐसे थामे थी मानो वह उसका वजन तौल रही हो।

"इसमें बम है क्या?" चमकती आंखों से उसने पूछा।

"जी हां, आपमें हिम्मत है इसे खेलने की?" नौजवान ने उल्टा प्रश्न किया।

उसने फौरन ही पैकेट खोल डाला। उसमें वे मिठाइयां भरी थीं जिसे नौजवान ने उस दिन खरीदी थीं। "मेरा छोटा-सा उपहार है यह। इसमें मेरा नाम लिखा हुआ है," उसने रैपर की ओर इशारा करते हुए कहा, और वह वहां से निकल गया।

"अरे ए¨¨ वापस आओ," वह उसके पीछे-पीछे दौड़ी, लेकिन तब तक वह सीढ़ियां उतरने लगा था।

असहाय-मुद्रा में चिन ने हाथ फैला दिए। मैंने रैपर खोला। वह स्टील रोलिंग मिल द्वारा विशिष्ट श्रमिकों को दिया जाने वाला प्रशंसा पत्र था। उस नौजवान का नाम शि युंगली था।

रैपर की सिकुड़ने मिटाते हुए चिन बोली, "मैं तो कभी सोच भी नहीं सकती थी कि यह इतना अच्छा श्रमिक होगा।''

मैंने सहमति जताते हुए कहा, "लेकिन उसे इस प्रशंसा-पत्र को इतना सस्ता नहीं बना देना चाहिए था।"

मेरी गंभीर मुद्रा देखकर चिन हंस पड़ी और बोली, "जी हां। नौजवान संघ की महान सेक्रेटरी महोदया इसे सहन नहीं कर पा रही हैं। लेकिन मुझे ऐसे लोग बेदह पसंद है जो यश और सम्मान को अधिक गंभीरतापूर्वक नहीं लेते।"

'पसंद' शब्द का उसका प्रयोग सुनकर मेरा मुंह खुला का खुला रह गया। मेरा विचार भांपते हुए उसने मुस्कराकर कहा, "मैंने पसंद शब्द का प्रयोग उसके व्यापकतम अर्थ में किया है।"

मैं उसे कुछ और सलाह देने वाली थी कि वह बोल उठी, "देखिए, इंसान आमतौर पर पेचीदा हुआ करते हैं। अनेक विशिष्ट लोगों में भी अनेक भद्दे दुर्गुण भरे रहते हैं।" कहते-कहते वह अचानक थम गई और लज्जा से लाल पड़कर दरवाजे से भाग निकली।

सभा में वह क्या बोलेगी, इस बारे में अभी तक मैं अंधकार में थी।

6

सभा अगले दिन ही होने वाली थी, चिन ने अभी तक अपना भाषण नहीं लिखा था। पुराने तरीके के अनुसार मैंने निश्चय किया कि सभी भाषण देने वालों को सायं को एक स्थान पर बैठाकर उनके भाषण सुन लिए जाएं। मुझे यह सुनिश्चित कर लेना था कि उनके भाषण राजनीतिक दृष्टि से सही और विश्वस्त हों।

चिन ने मुझे खोज निकाला और मुझसे माफी मांगते हुए कहा कि उसे एक अन्य स्थान पर जाना आवश्यक है।

"क्या कहा? तुम इतनी महत्वपूर्ण बैठक से अनुपस्थित रहने की अनुमति मांग रही हो?"

"मुझे सांस्कृतिक केन्द्र के एक नाटक की ड्रेस रिहर्सल में भाग लेना है। इसलिए मैं आपकी ड्रेस रिहर्सल में नहीं आ सकूंगी।"

ड्रेस रिहर्सल! वह ऐसा कैसे कह सकी थी? "नहीं, तुम्हें आना ही पड़ेगा'' मैंने दृढ़तापूर्वक कहा।

वह अधीर हो बैठी। "मैं आपको अभी बताए देती हूं कि मैं अपने भाषण में क्या कहने वाली हूं। लेकिन चूंकि उस नाटक में मेरी मुख्य भूमिका है, इसलिए मुझे वहां तो जाना ही होगा।"

किस पात्र की भूमिका कर रही हो? "मैं अपनी बात पर अड़ी रही।"

"एक ऐसी लड़की की जो अपनी जिन्दगी में अपना लक्ष्य स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रही और इसलिए वह अपना समय बनाव-शृंगार करते, नाचते-गाते बिता··"

अब मुझे उसका छत पर किया गया नाच याद आ गया और मेरे दिमाग में सारी स्थिति साफ हो गई, "बहुत शीघ्र मेरा चेहरा झुर्रियों से भर जाएगा और मेरे बाल सफेद हो जाएंगे,'' मैंने दुहराया।

उसने मेरे हाथ थाम लिए। उसके नेत्र चमक रहे थे। "आपने हमें रिहर्सल करते देखा है?"

"मैंने··· मैंने उसके बारे में सुना है," हिचकिचाते हुए मैंने कहा।

तो उस सुबह वह केवल अपने संवाद दुहरा रही थी! मैंने उसका हाथ थपथपाया और उससे कह दिया, "ठीक है, तुम अपनी रिहर्सल में जाओ।"

वह मुझसे लिपट गई और मुझे लिए-लिए ही कमरे में घूम-घूम कर वाल्ट्ज नृत्य का एक घूमर नाच उठी। मेरा सिर चकराने

लगा। मैंने उसे रोक दिया।

"भविष्य में इन गतिविधियों से दूर ही रहा करो," मैंने कहा।

वह चौंक पड़ी, "क्यों भला?"

मुझे उसकी परेशानी समझ में नहीं आई। "अब तुम एक आदर्श श्रमिक बन गई हो। इसलिए तुम्हें हर काम में खुद पर कड़ा नियंत्रण रखना चाहिए। तुम्हें न सिर्फ अपना काम ही अच्छी तरह करना चाहिए, बल्कि तुम्हारा आचरण भी आदर्श होना चाहिए, मैंने उसके वस्त्रों पर अर्थपूर्ण निगाह डालते हुए कहा था।

उसने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और बोली, "क्या एक आदर्श श्रमिक का अपना कोई शौक नहीं हो सकता?"

"जरूर हो सकता है। लेकिन तुम्हारी राजनीतिक प्रतिष्ठा उसकी अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उसकी रक्षा के लिए तुम्हें कठोर परिश्रम करना पड़ेगा, अन्यथा तुम मात्र एक बार प्रकाश देकर सदा के लिए बुझ जाओगी।"

उसने उत्तर दिया, "मुझे उन लोगों से घृणा है जो अपनी प्रतिष्ठा बचाए रखने की खातिर झूठे स्वांग भरते रहते हैं। मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि किसी दिन मैं आदर्श श्रमिक बन सकूंगी और मुझे नहीं लगता कि इस तमगे को आजीवन लटकाए घूमना जरूरी है।... हां, इसे अपने पास बनाए रखने के लिए मैं भरपूर मेहनत करती रहूंगी। किन्तु यदि मुझे कभी आदर्श श्रमिक और अभिनेत्री के बीच चुनाव करना पड़ गया, तो मैं अभिनेत्री बनना ज्यादा पसंद करूंगी।"

"यह तुम क्या कह रही हो!" मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। फिर भी मैंने अपने आवेश पर नियंत्रण रखा और उसे शान्त करने के लिए कहा, "मेरा मतलब यह नहीं था।"

वह प्रसन्न हो उठी। मेरे पास बैठकर बड़े आदर से उसने पूछा, "हमारे नेता लोग मुझसे और क्या आशा करते हैं?"

उसकी विनम्रता से मैं खुश हो गई। उसका सुनहरी क्लिप उसके

बालों से निकालते हुए किसी बड़ी बहन की तरह मैंने उससे कहा, "हमारी सभा में बड़े-बड़े नेता और मेहमान आएंगे। अच्छा हो अगर तुम इसे न पहनो···।''

"क्यों?"

"इसे पहनना इतना जरूरी क्यों है?" मैंने मुस्कराते हुए पूछा।

"इसलिए क्योंकि इसे पहनकर मैं सुन्दर दिखती हूं। यह मुझे इसकी याद भी दिलाती रहती है कि सामान देते वक्त अपने ग्राहकों के सामने मुझे अपना सिर नीचा नहीं कर लेना चाहिए। व्यस्त हो जाने पर मैं प्रायः यह बात भूल जाया करती हूं। जब भी सिर नीचा करती हूं, यह चेन मेरे कान छूकर मुझे याद दिला देती है।"

तो माजरा यह था! उसके पास सभा में श्रोताओं को बताने के लिए कई बातें थीं।

"ठीक है, तुम अपने श्रोताओं को यह जरूर बता देना कि यह सुनहरी चेन तुम्हें कैसे याद दिला देती है कि सामान देते वक्त अपने ग्राहकों की ओर सीधे देखना चाहिए। लेकिन यह मत कह बैठना कि चेन बहुत खूबसूरत भी है।"

"लेकिन मैं तो सिर्फ इसी वजह से इसे पहनती हूं।"

मैंने उसका सिर थपथपाया, "पगली लड़की, इस रहस्य को दूसरों से छिपाकर ही रखें न! भला भरी सभा में तुम यह बात कैसे कह सकती हो?"

"क्यों नहीं कह सकती?" वह मंद-मंद हंसती हुई बोली, "मैं तो हरेक से यह बात कहना चाहती हूं। मुझे सुन्दर दिखना अच्छा लगता है। जो लोग जिन्दगी को प्यार करते हैं, सिर्फ वे ही अपने रंग-रूप पर ध्यान दिया करते हैं।''

मैंने सोचा कि शायद सभी अनाड़ी अभिनेत्रियां ऐसी ही हुआ करती हैं।

"बताओ तो, तुम कल किस विषय पर बोलने जा रही हो?"

उसे मेरे प्रश्न पर विचार करते देख मैंने फिर कहा, "मुझे तो सिर्फ इतना बता दो कि तुम्हें अपने काम से प्यार कैसे हो गया?"

"बड़ी लम्बी है यह कहानी।" उसने एक नि:श्वास भरा और फिर कहने लगी, "मैं तो एक अभिनेत्री बनना चाहती थी, लेकिन मैंने वह मौका गंवा दिया। अब तो अभिनेत्री बनने की मेरी उम्र रही नहीं।"

"लेकिन तुम अपना काम तो बड़ी निपुणता से करती हो।"

"मैंने समझ लिया है कि हर किसी को उन्नत देशों में भी अपना मन-पसंद काम नहीं मिल पाता, तो हमारे जैसे देश की तो बात ही क्या!"

"फिर तुम्हें अपने काम से प्यार कैसे हो गया?"

उसके उत्तर ने मुझे एक बार फिर आश्चर्यचकित कर दिया।

"अपनी प्रत्येक परिचित वस्तु को मनुष्य पसंद करने लग जाता है। हम कोई भी काम क्यों न करते हों, एक बार उसकी आदत पड़ जाने पर हमें उससे प्यार हो ही जाता है।"

"प्रत्येक युवा तुम्हारे जैसा नहीं होता," मैंने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "तुम तो मुझे यह बताओ कि तुम अपने ग्राहकों के साथ इतना दयालुता-भरा व्यवहार क्यों करती हो?"

वह एक क्षण सोचती रही। "पहले मैं आपको यह बताती हूं कि ग्राहकों ने किस तरह मेरी सहायता की है।"

"तुम्हारी सहायता ग्राहकों ने की है?"

"मेरे नियमित ग्राहकों को ही लीजिए," वह बोली, "एक मध्य-वयसी अध्यापिका थी। उसका चेहरा चादर जैसा म्लान रहता था। प्रत्येक मास वेतन मिलने के दिन वह कुछ मिठाइयां खरीदने आया करती थी। लेकिन एक बार वह नहीं आई। उसके बदले उसकी सास के साथ उसकी नन्हीं बिटिया आई। आंसू बहाते उस वृद्ध महिला ने मुझे बताया कि वह अपने आठ वर्ग मीटर के कमरे में हर रात देर तक अपना पाठ तैयार करती सदा व्यस्त रही है। उसका वेतन बहुत कम है। वह केवल मेरे लिए और बच्चों के लिए मिठाई खरीदती है। अब चूंकि 'हाइपग्लाइसीमिया' से आक्रांत होकर अस्पताल में भर्ती है, इसलिए मैं उसके लिए मिठाई खरीदने आई हूं। उसे बीमारी में इसकी आवश्यकता है···।"

"एक बूढ़ा मजदूर प्रायः अपने पौत्र के साथ आया करता है जो केवल चाकलेट खरीदता है। उसके दादा ने उससे कहा था– तुम बड़े शुभ नक्षत्रों में पैदा हुए हो। बीस वर्ष पार करने से पहले, चाकलेट की तो बात ही छोड़ो, मैंने कभी मिठाई तक नहीं चखी थी।"

"अनेक जवान लड़के विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के उपलक्ष्य में मिठाई खरीदने आया करते थे। जो असफल रह जाते थे वे कहते कि हम अगले वर्ष तुम्हें मिठाई खिलाएंगे।"

"इस वर्ष दो और प्रवेश पा गए। तब भी आखिरी बचे लड़के ने यही कहा कि अगले वर्ष आकर तुम मुझसे मिठाई खाना।"

उसकी आंखें नम हो आई थीं। "इन लोगों ने मुझे जिन्दगी के बारे में बहुत कुछ सिखाया है। इन जैसे साधारण लोगों की सेवा करके मुझे बहुत खुशी होती है।"

मानो वह खुद से ही बातें किए जा रही थी। उसने पलटकर अपनी आंखें खिड़की के बाहर जमा दीं। अस्त होते सूर्य की रोशनी में उसके आंसू झिलमिला रहे थे।

मैं जान गई कि सभा में वह किस विषय में भाषण देगी– लोगों के प्रति, जीवन के प्रति, सौंदर्य के प्रति, अपने प्यार के प्रति।

मैंने उसे गलत समझा था। अपनी कठोर सोच और विचारों की याद कर मैं शर्म से लाल हो गई···

"तुमने बहुत बढ़िया बात कही है। धन्यवाद," कहते मेरा गला भर आया था।

लज्जा से परेशान वह एक कागज के टुकड़े पर कुछ घसीटने लगी थी। मैंने उसे ड्रेस-रिहर्सल में जाने को कहा।

उसने मेरी ओर कृतज्ञता-भरी मुस्कान से देखा।

मैंने पूछा, "क्या मैं तुम्हारा नाटक देखने आ सकती हूं?"

आश्चर्य तथा आनन्द में डूबी उसने मुझे दो टिकट थमा दिए। "कल हमारा पहला शो होगा। आशा है, आप उसके बारे में अपने राय मुझे अवश्य बताएंगी।"

"धन्यवाद।" मैं उसे दरवाजे तक पहुंचाने गई। शायद मैं उससे कुछ और भी कहना चाह रही थी। किन्तु मैंने उससे केवल यही पूछा, "तुम हमेशा इतनी खुश क्यों रहा करती हो?"

वह एक क्षण चुप रही और फिर हंस पड़ी। "मुझे पता नहीं। मुझे जिन्दगी बड़ी मीठी लगती है।"

वह चली गई। गलियारे में किसी से भेंट हो जाने पर मैंने उसे फिर से हंसते सुना।

मैंने कागज का वह टुकड़ा उठा लिया। उस पर एक हिरण बना था जिसकी सींगों पर गुलाब का एक फूल किसी ताज की तरह बनाया हुआ था।

मैंने दुहराया, "जिन्दगी बड़ी मीठी लगती है।"

गुलाबों से लदे दिल वाला सोने का हिरण संसार में चौकड़ी भरेगा।□